



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY  
भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1  
प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 66]  
No. 66]

नई दिल्ली, बुधवार, अप्रैल 5, 2006/चैत्र 15, 1928  
NEW DELHI, WEDNESDAY, APRIL 5, 2006/CHAITRA 15, 1928

**वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय**

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

**अधिसूचना**

नई दिल्ली, 5 अप्रैल, 2006

**अंतिम जांच परिणाम**

**(निर्णायक समीक्षा)**

**विषय :** चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित मेट्रोनाइडाजोल के आयात के संबंध में पाटनरोधी

सं. 15/9/2003-डी जी ए डी.—1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे इसके बाद अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान तथा उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति का निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे इसके बाद नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए ;

**क. पृष्ठभूमि**

- जबकि उपर्युक्त नियमावली को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) ने दिनांक 14 जुलाई, 2000 की अधिसूचना सं० 17/1/99-डीजीएडी द्वारा अंतिम जांच परिणाम अधिसूचित किए जिनमें चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित मेट्रोनाइडाजोल के सभी आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की गई थी। इस कार्यवाही में मूल जांच दिनांक 29 जुलाई, 1999 को आरंभ की गई थी। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक जांच परिणाम दिनांक 21 फरवरी, 2000 की अधिसूचना सं० 17/1/1999-डीजीएडी द्वारा जारी किए गए थे। प्राधिकारी के अंतिम जांच

परिणाम निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा दिनांक 14 जुलाई, 2000 की अधिसूचना सं० 17/1/1999-डीजीएडी द्वारा जारी किए गए और संबद्ध माल पर अंतिम शुल्क दिनांक 31.8.2000 की सीमाशुल्क अधिसूचना द्वारा लगाए गए थे ।

3. निर्दिष्ट प्राधिकारी को उपरोक्त अधिनियम की धारा 9क(5) के अनुसार, मै० आरती ड्रग्स लिमिटेड, मुंबई और मै० यूनिकेम लेबोरेट्रीज लि०, मुंबई से एक प्रमाणित आवेदन पत्र प्राप्त हुआ जिसमें संबद्ध माल पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्कों की समीक्षा, उनमें वृद्धि तथा उन्हें अगले पांच वर्षों के लिए जारी रखे जाने का इस आधार पर अनुरोध किया गया कि पाटनरोधी शुल्कों को समाप्त किए जाने के परिणामस्वरूप पाटन तथा क्षति के जारी रहने अथवा उनकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है । निर्दिष्ट प्राधिकारी ने भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित दिनांक 8 अप्रैल, 2005 की एक सार्वजनिक सूचना सं० 15/9/2003-डीजीएडी जारी की जिसके अनुसार इस बात की जांच किए जाने के लिए पाटनरोधी(निर्णायक समीक्षा) जांच आरंभ की गई कि क्या पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से पाटन अथवा क्षति के जारी रहने अथवा उनकी पुनरावृत्ति होने की संभावना होगी ।

#### ख. प्रक्रिया

4 इस जांच में नीचे वर्णित प्रक्रिया अपनाई गई है:-

- i) समीक्षा की शुरुआत के पश्चात प्राधिकारी ने आवश्यक संगत सूचना मंगाने के लिए नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को जांच प्रारंभ अधिसूचना सहित प्रश्नावलियां भेजी ;
- ii) उपरोक्त नियमावली के अनुसार, जानकारी मंगाने के लिए भारत के घरेलू उद्योग को भी सूचना भेजी गई ।
- iii) नियम 6(2) के अनुसार, जांच आरंभ किए जाने के बारे में संबद्ध देश के नई दिल्ली स्थित दूतावास को सूचित किया गया और उनसे अनुरोध किया गया कि वे निर्धारित समयावधि के भीतर प्रश्नावली का प्रत्युत्तर देने हेतु अपने-अपने देशों के निर्यातकों/उत्पादकों को सलाह दें ।

- iv) नियम 6(4) के अनुसार, संगत जानकारी मंगाने के प्रयोजनार्थ भारत में संबद्ध माल के ज्ञात आयातकों और उपभोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजी गईं ।
- v) वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआई एंड एस) से अनुरोध किया गया कि वे पिछले तीन वर्षों और जांच अवधि के लिए संबद्ध माल के आयातों के ब्यौरे उपलब्ध करा दें । इंटरनेशनल बिजनेस इन्फार्मेशन सर्विसिज (आईबीआईएस) से प्राप्त घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों की आईबीआईएस से पड़ताल की गई ।
- vi) जांच प्रारंभ संबंधी अधिसूचना की प्रतियाँ व्यापक परिचालन के लिए फिक्की, सीआईआई तथा एसोचैम को भी भेजी गई थीं ।
- vii) किसी भी निर्यातक/उत्पादक और आयातक ने प्रश्नावली का प्रत्युत्तर नहीं भेजा ।
- viii) संबद्ध माल के घरेलू उत्पादकों - मै0 आरती ड्रग्स लि0, मुंबई, मै0 यूनिकेम लेबोरेट्रीज लि0, मुंबई और मै0 जे बी केमिकल्स, मुंबई ने जानकारी/आंकड़े प्रस्तुत किये ।
- ix) प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत जानकारी का इस प्रयोजनार्थ सत्यापन किया ताकि हुई क्षति की जांच की जा सके, भारत में संबद्ध माल की इष्टतम उत्पादन लागत, विनिर्माण एवं बिक्री लागत की गणना की जा सके ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यदि पाटन मार्जिन से कम राशि का पाटनरोधी शुल्क लगाया जाता है तो क्या वह घरेलू उद्योग को हो रही क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ।
- x) प्राधिकारी ने दिनांक 8.3.06 को एक सार्वजनिक सुनवाई का आयोजन किया ताकि इच्छुक पक्षकारों की मौखिक सुनवाई की जा सके । इस सुनवाई में घरेलू उद्योग के प्रतिनिधि शामिल हुए । इस सार्वजनिक सुनवाई में उपस्थित पक्षकारों से अनुरोध किया गया कि वे मौखिक रूप से व्यक्त अपने विचारों को लिखित रूप में प्रस्तुत कर दें । इच्छुक पक्षकारों से प्राप्त लिखित निवेदनों पर निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा इस जांच परिणाम में विचार किया गया है ।

- xi) प्राधिकारी ने विभिन्न इच्छुक पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत सभी साक्ष्यों के अगोपनीय अंश वाली सार्वजनिक फाइल सभी इच्छुक पक्षकारों द्वारा अनुरोध पर निरीक्षण हेतु उपलब्ध कराई।
- xii) जांच प्रारंभ अधिसूचना और उसके बाद सार्वजनिक सुनवाई के प्रत्युत्तर में विभिन्न इच्छुक पक्षकारों द्वारा व्यक्त विचारों पर चर्चा, जहां तक वे नियमावली के अनुसार संगत हैं और जहां तक उनका इस मामले से संबंध है, पर आगे संगत पैराग्राफों में चर्चा की गई है। इच्छुक पक्षकारों द्वारा किए गए तर्कों की जांच की गई है, उन पर विचार किया गया और जहां कहीं यथोचित हुआ, उन पर संगत पैराग्राफों में चर्चा की गई है।
- xiii) उपर्युक्त नियमावली के नियम 16 के अनुसार, इन जांच परिणामों के लिए विचार किए गए अनिवार्य तथ्यों/आधार का खुलासा ज्ञात इच्छुक पक्षकारों को दिनांक 21.3.2006 को किया गया और इस संबंध में प्राप्त टिप्पणियों पर इन जांच परिणामों में विधिवत विचार किया गया है।
- xiv) जांच, दिनांक 1 अप्रैल 2003 से 30 सितंबर, 2004 (18 माह) की जांच अवधि के लिए की गई। किंतु, क्षति विश्लेषण अप्रैल 2000-मार्च 2001, अप्रैल 2001-मार्च 2002, अप्रैल 2002-मार्च 2003 तथा जांच अवधि के लिए किया गया।
- xv) इस अधिसूचना में \*\*\*\* पर व्यक्त जानकारी किसी इच्छुक पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत जानकारी है और प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी नियमावली के तहत इसी पर विचार किया गया।

#### ग. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

5. मूल जांच में शामिल उत्पाद मेट्रोनाइडाजोल था। चूंकि यह एक निर्णायक समीक्षा है, अतः इस जांच में मूल जांच में कवर किए गए उत्पाद को ही शामिल किया गया है। मेट्रोनाइडाजोल एक दस्तरोधी तथा एंटीमाइक्रोबायल औषधि है। इसका प्रयोग एमोयवाइस, ट्राइकोमोनस, सर्जरी के बाद आप्रेशन पश्चात इन्फेक्शन को रोकने, गायर्डाइसिस, अत्यधिक अल्सरेटिव और जिंगेवाइटिस, एनेरोबिक,

एनेरोबिक माइक्रो निर्माण के कारण इन्फेक्शन के वैगिनोसिस उपचार के मामलों में किया जाता है। यह एक कार्बनिक रसायन है जो उपरोक्त सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की प्रथम अनुसूची के अध्याय 29 के शीर्ष सं० 29332920 और आईटीसी एचएस वर्गीकरण के तहत आता है। किंतु, यह वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और इसकी मौजूदा जांच के दायरे पर किसी भी प्रकार कोई बाध्यता नहीं है। घरेलू उद्योग समान विशेषताओं और विनिर्देशनों वाले मेट्रोनाइडाजोल का उत्पादन भी करता है। किसी भी इच्छुक पक्षकार द्वारा विचाराधीन उत्पाद अथवा समान वस्तु के मुद्दे पर कोई तर्क नहीं किया गया है और इसीलिए प्राधिकारी का निर्णय है कि घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित उत्पाद और संबद्ध देश द्वारा विनिर्मित तथा निर्यातित उत्पाद पाटनरोधी नियमावली के अनुसार समान वस्तुएं हैं।

#### घ. घरेलू उद्योग

6. मूल जांच में पाटनरोधी जांच के लिए आवेदन-पत्र घरेलू उद्योग की ओर से मै० आरती ड्रग्स लिमिटेड, मुंबई और मै० आरे ड्रग्स एंड फार्मास्युटिकल्स, मुंबई द्वारा दायर किया गया था। मौजूदा निर्णायक समीक्षा में मै० आरती ड्रग्स लिमिटेड, मुंबई, मै० यूनिकेम लेबोरेट्रीज लि०, मुंबई और मै० जे बी केमिकल्स लि०, मुंबई द्वारा जानकारी/आंकड़े उपलब्ध कराए गए हैं। मै० आरती ड्रग्स लिमिटेड, मुंबई और मै० यूनिकेम लेबोरेट्रीज लि०, मुंबई द्वारा प्रस्तुत आंकड़े तथा जानकारी पर घरेलू उद्योग को हुई क्षति के विश्लेषण हेतु विचार किया गया है। मै० जे बी केमिकल्स द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों पर क्षति विश्लेषण के लिए विचार नहीं किया गया है क्योंकि जांच अवधि के दौरान इस कंपनी की घरेलू बिक्रियां केवल 1 मी.टन रही थीं जबकि शेष उत्पादन का निर्यात किया गया था।
7. इस जांच में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग ने चीन जन.गण. से संबद्ध माल के कुल निर्यात का लगभग 50% भाग आयात किया जिसमें मै० आरती लि० का हिस्सा 40%, मै० यूनिकेम लेबोरेट्रीज लि० का हिस्सा 3.07% और मै० जे बी केमिकल्स का हिस्सा कुल आयात के 7.15% रहा। यह माना गया है कि ये निर्यात केवल निर्यात के प्रयोजनार्थ मेट्रोनाइडाजोल बेंजोएट के विनिर्माण हेतु शुल्क मुक्त योजना के अग्रिम लाइसेंसों के तहत किए गए और वे देश के वाणिज्य में शामिल नहीं हुए। अतः आवेदकों को घरेलू उद्योग के क्षेत्राधिकार से हटाया नहीं जा सकता है।

8. इस मुद्दे की जांच पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) और पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 4.1(i) के अनुसार की गई है। पाटनरोधी करार के अनुसार "जब उत्पादक निर्यातकों अथवा आयातकों से संबंध हों अथवा वे स्वयं कथित रूप से पाटित उत्पाद के आयातक हों तो ऐसी स्थिति में 'घरेलू उद्योग' की व्याख्या शेष उत्पादकों के रूप में की जा सकती है।" उक्त नियमावली के नियम 2 (ख) के अनुसार, "घरेलू उद्योग" का अर्थ ऐसे संपूर्ण घरेलू उत्पादक से है जो समान उत्पाद के विनिर्माण तथा उससे संबंधित कार्यकलाप में लगा हो अथवा जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उस वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का प्रमुख उत्पादन हो लेकिन उसमें यह शामिल नहीं है कि जब ऐसे उत्पादक तथाकथित पाटित वस्तुओं के निर्यातकों अथवा आयातकों से संबंधित हों अथवा वे स्वयं उसके आयातक हों जिस मामले में ऐसे उत्पादक को घरेलू उद्योग का हिस्सा नहीं माना जाता हो।"
9. प्राधिकारी ने आवेदकों द्वारा अग्रिम लाइसेंसों के तहत किए गए आयातों संबंधी मुद्दे की जांच की। भारत की विदेश व्यापार नीति के अनुसार, निर्यात उत्पादन के लिए आयातित निविष्टियों को भारत में नहीं बेचा जा सकता है। प्रोसेसिंग/विनिर्माण के बाद अग्रिम लाइसेंसों पर आयातित निविष्टियों का आवश्यक रूप से निर्यात किया जाना होता है। अतः प्राधिकारी की राय है कि शुल्क मुक्त अग्रिम लाइसेंसों के तहत आयातित निविष्टियों का प्रयोग जब केवल निर्यात प्रयोजन के लिए किया जाता है तब घरेलू उद्योग के उत्पादक पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) के तहत अनर्ह नहीं होंगे।
10. घरेलू उद्योग ने भी यह मुद्दा उठाया है कि जे बी केमिकल्स को पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) की परिभाषा के अनुसार घरेलू उद्योग माना जाए क्योंकि यह नियमावली समान उत्पाद के विनिर्माण में लगे सभी उत्पादकों का उल्लेख करती है। प्राधिकारी ने इस मुद्दे की जांच की है और उसकी राय है कि मै0 जे बी केमिकल्स नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग का हिस्सा है, किंतु उसके आंकड़ों का प्रयोग क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ नहीं किया गया है क्योंकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति का विश्लेषण घरेलू बाजार में उसकी बिक्रियों के संदर्भ में किया जाता है। इस मामले में मै0 जे बी केमिकल्स ने अपने उत्पादन के केवल 1 मी.टन जांच अवधि के दौरान घरेलू बाजार में बेचीं जबकि उसके शेष उत्पादन का निर्यात किया गया था। चूंकि मै0 जे बी केमिकल्स द्वारा 1 मी.टन

की बिक्री घरेलू उद्योग को हुई क्षति पर उसके प्रभाव के लिए काफी नहीं होगी, अतः इस कंपनी के आंकड़ों पर क्षति-विश्लेषण के प्रयोजनार्थ विचार नहीं किया गया है ।

## ड. समीक्षा का प्रारंभ तथा उठाए गए तर्क

### ड.1 आवेदक घरेलू उद्योग के विचार

11. घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि मेट्रोनाइडाजोल पर पाटनरोधी शुल्क लगे रहने के बावजूद संबद्ध देश से पाटन का होना जारी रहा । 'यदि आयात मात्रा और पाटनरोधी शुल्क लगे रहने के बावजूद भारत को माल के निर्यात का कीमत स्तर ऐसा रहा है तो ऐसी संभावना है कि आयात मात्रा में यदि पाटनरोधी शुल्क वापस लिए जाते हैं, और आगे बढ़ोतरी होगी ।' मौजूदा निष्पादन स्थिति के संबंध में घरेलू उद्योग ने निवेदन किया कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से घरेलू उद्योग को अपने उत्पादन को कायम रखने और उसमें बढ़ोतरी करने तथा इष्टतम स्तर तक अपनी क्षमता का उपयोग करने और अपनी बिक्री मात्रा को कायम रखने में सहायता मिली है । आयातों की लैंडिंग कीमत घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली कीमत से काफी कम है । लाभप्रदता के संबंध में यह उद्योग इन वर्षों में प्रति यूनिट काफी हानि का सामना कर रहा है । इन आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में काफी सीमा तक पहले ही कटौती हो रही है, यदि मौजूदा शुल्क समाप्त कर दिया जाता है तो ऐसी स्थिति में कीमत कटौती में और अधिक वृद्धि हो जाएगी । इसके अलावा, घरेलू उद्योग का निष्पादन विचाराधीन अवधि के दौरान पहले ही विपरीत स्थिति में रहा है और ऐसी संभावना है कि पाटनरोधी उपाय हटा दिए जाने से घरेलू उद्योग को हो रही क्षति और अधिक हो जाएगी । यह भी निवेदन किया गया है कि घरेलू उद्योग की समझ में विचाराधीन उत्पाद के संबंध में चीन की उत्पादन क्षमता वहां की घरेलू मांग की तुलना में कहीं अधिक है। यदि मौजूदा उपाय समाप्त कर दिए जाने की अनुमति होती है तो ऐसी स्थिति में ऐसी आशंका है कि अप्रयुक्त उत्पादन क्षमता के काफी बड़े हिस्से का प्रयोग भारतीय बाजार को भरने के लिए किया जाएगा ।

## ड.2 प्राधिकारी द्वारा जांच

12. प्राधिकारी घरेलू उद्योग को हो रही निरंतर क्षति के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए तर्कों को नोट करता है। इन तर्कों पर घरेलू उद्योग को हो रही क्षति, घरेलू उद्योग को पाटन तथा क्षति की पुनरावृत्ति की आशंका का विश्लेषण करते समय ध्यान में रखा गया है।

## पाटन मार्जिन की गणना-पद्धति

च. पाटन निर्धारण: सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

### च.1 प्राधिकारी द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रश्नावली के प्रत्युत्तर की जांच

13. प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के आंकलन के प्रयोजनार्थ पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 8(2) के अनुसार इस पूर्व कल्पना से कार्यवाही आगे बढ़ाई कि कोई भी देश जिसे जांच से पहले के तीन वर्षों की अवधि के दौरान किसी डब्ल्यूटीओ सदस्य देश के निर्दिष्ट प्राधिकारी अथवा सक्षम प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी जांचों के प्रयोजनार्थ एक गैरबाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया हो, एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है। पिछले तीन वर्षों में चीन जन.गण. को यूरोपीय संघ तथा संयुक्त राज्य अमरीका जैसे डब्ल्यूटीओ सदस्यों द्वारा पाटनरोधी जांचों में एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है। मौजूदा मामले में चीन जन.गण. की एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में जांच किए जाने का प्रस्ताव है।
14. यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैराग्राफ 8 के अनुसार किसी गैर बाजार अर्थव्यवस्था की पूर्व धारणा का तब खंडन किया जा सकता है बशर्ते चीन के निर्यातक पैराग्राफ 8 के उप पैरा (3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों के अनुसार जानकारी तथा पर्याप्त साक्ष्य अथवा उसके विपरीत उपलब्ध करा दें। चीन जन.गण. के संबद्ध माल के सहयोगकारी निर्यातकों/उत्पादकों से अपेक्षा है कि वे आवश्यक जानकारी/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत कर दें जैसाकि बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रश्नावली के प्रत्युत्तर में पैराग्राफ 8 के उप पैरा (3) में उल्लेख है ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित मानदंडों पर विचार कर सके कि क्या:-



- क) कीमतों लागतों तथा कच्चे माल सहित निविष्टियों, प्रौद्योगिकी एवं श्रम लागत, उत्पादन, बिक्रियों तथा पूंजी निवेश के संबंध में चीन जन.गण. की संबंधित फर्मों के निर्णय उन बाजार संकेतकों के प्रत्युत्तर में किए जाते हैं जो सप्लाई तथा मांग को परिलक्षित करते हैं और इस संबंध में वहां कोई ज्यादा सरकारी हस्तक्षेप नहीं हो और यह भी कि क्या प्रमुख निविष्टियों की लागतें बाजार मूल्यों को काफी हद तक परिलक्षित करती हैं;
- ख) ऐसी फर्मों की उत्पादन लागतें तथा वित्तीय स्थिति पिछली गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली से आगे ले जाए गए अवरोधों के अध्यक्षीन होती है, विशेष रूप से परिसंपत्तियों के मूल्यहास, अन्य निपटानों, वस्तु व्यापार और ऋणों के मुआवजे द्वारा भुगतान के संबंध में;
- ग) ऐसी फर्में दिवालियापन तथा संपदा कानूनों के अध्यक्षीन होती हैं जो कार्यचालन के लिए फर्मों की कानूनी निश्चितता और स्थायित्व की गारंटी देते हैं; और
- घ) विनिमय दर परिवर्तन बाजार दर पर किए जाते हैं ।
15. प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली की प्रतियां भेजीं । किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने निर्यातक एवं बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार (एमईटी) प्रश्नावली का प्रत्युत्तर नहीं दिया । अतः गैर बाजार अर्थव्यवस्था की पूर्व धारणा खंडन किए बिना रह गई और इसीलिए प्राधिकारी चीन जन.गण. के निर्यातकों/उत्पादकों को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था मानते हुए कार्यवाही आगे बढ़ा रहा है ।
16. उपरोक्त के मद्देनजर, प्राधिकारी चीन के निर्यातकों के संबंध में सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए अनुबंध 1 के पैराग्राफ 1 से 6 में निर्धारित सिद्धांतों को लागू नहीं कर सकता है । अतः चीन जन.गण. के सभी निर्यातकों/उत्पादकों के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैराग्राफ 7 में यथाविहित गैर-बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी नियमों के अनुसार किया जाता है ।
17. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 के अनुसार प्राधिकारी से अपेक्षा है कि वह सामान्य मूल्य का निर्धारण 'बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत

अथवा परिकलित मूल्य अथवा उस कीमत के आधार पर करे जो भारत सहित अन्य देशों के लिए किसी तीसरे देश की कीमत हो अथवा जहां यह संभव न हो अथवा किसी अन्य यथोचित आधार पर जिसमें समान उत्पाद के लिए भारत में वास्तव में दी गई अथवा देय कीमत शामिल हो ।' बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के सामान्य मूल्य के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा कोई भी आंकड़े अथवा जानकारी उपलब्ध नहीं कराई गई । इस मामले में निर्यातकों/उत्पादकों ने प्रत्युत्तर नहीं दिया है अतः बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के सामान्य मूल्य के संबंध में प्राधिकारी के पास कोई भी आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं । भारत के लिए तीसरे देश की कीमतें भी भारत के लिए अन्य देशों (संबद्ध देश को छोड़कर) से आयातों के रूप में निर्धारण के लिए इस बात के लिए बहुत कम पड़ेगी जिससे सामान्य मूल्य का सार्थक निष्कर्ष आ सके । अतः प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का निर्धारण ' किसी अन्य यथोचित आधार' वाली पद्धति के आसरे किया है ।

## च.2 सामान्य मूल्य

18. इन परिस्थितियों में प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य की गणना अंतर्राष्ट्रीय कीमतों पर मेट्रोनाइडाजोल के विनिर्माण हेतु कच्चे माल, घरेलू उद्योग के खपत मानदंडों तथा यथोचित लाभ पर विचार करते हुए की है । उपलब्ध उपरोक्त जानकारी के आधार पर सामान्य मूल्य की गणना \*\*\*\* रु0/कि.ग्रा. अथवा \*\*\*\* अम.डा./कि.ग्रा. पर जांच अवधि के दौरान 1 अम.डा. = 46.06 रु0 की औसत विनिमय दर पर विचार करते हुए की है ।

## च.3 निर्यात कीमत

19. निर्यात कीमत की गणना आईबीआईएस द्वारा उपलब्ध कराए गए सौदेवार ब्यौरों के आधार पर की गई है । जांच अवधि के दौरान भारत औसत निर्यात कीमत का सीआईएफ मूल्य \*\*\*\* रु0/कि.ग्रा. ( \*\*\*\* अम.डा./कि.ग्रा. ) रही । \*\*\*\* अम.डा. पर अंतरदेशीय भाड़े, \*\*\*\* अम.डा. पर समुद्री भाड़े और \*\*\*\* अम.डा. पर समुद्री बीमे के लिए समायोजन करने के बाद कारखानागत निर्यात कीमत की गणना \*\*\*\* अम.डा. (जांच अवधि के दौरान 1 अम.डा. = 46.06 रु0) पर की गई है ।

#### च.4 पाटन मार्जिन

20. ऊपर यथानिर्धारित सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत के आधार पर प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किया:-

#### पाटन मार्जिन

निर्यातक/उत्पादक	सामान्य मूल्य अम.डा./कि.ग्रा.	निर्यात कीमत अम.डा./कि.ग्रा.	पाटन मार्जिन अम.डा./कि.ग्रा.
चीन जन.गण. के सभी निर्यातक	***	***	*** (68.67%)

#### क्षति निर्धारण की पद्धति और कारणात्मक संबंध की जांच

#### छ. क्षति का निर्धारण

#### छ.1 क्षति का जारी रहना

#### घरेलू उद्योग के विचार सारांश रूप में नीचे दिए जा रहे हैं

21. पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से घरेलू उद्योग को अपना उत्पादन तथा बिक्रियां कायम रखने और उनमें वृद्धि करने तथा अपेक्षतया उच्च स्तर पर अपनी क्षमता का उपयोग करने में सहायता मिली है। घरेलू उद्योग स्वयं अपना सुधार कर सकता था बशर्ते पाटित आयात बाजार में उपलब्ध नहीं होते। उत्पादन में वृद्धि होने के फलस्वरूप उत्पादकता में वृद्धि हुई। पाटनरोधी शुल्क के बिना आयातों की लैंडेड कीमत घरेलू उद्योग की निवल वसूली की तुलना में काफी कम रही। घरेलू उद्योग शुल्क लगाए जाने के बाद भी बाजार से उचित कीमत वसूल नहीं कर सका क्योंकि चीन जन.गण. से पाटित आयात शुल्क मुक्त योजना के दुरुपयोग के कारण अपेक्षतया कम कीमत पर बाजार में उपलब्ध रहे। घरेलू उद्योग के नकद लाभ में क्षति अवधि के दौरान स्थिति काफी बिगड़ गई और इसी प्रकार पूंजी निवेश पर आय में भी काफी प्रतिकूल स्थिति दिखाई दी।

22. यह भी माना गया है कि ईओयू द्वारा किए गए आयातों की वजह से घरेलू उद्योग को क्षति हुई है क्योंकि भारत सरकार द्वारा ईओयू को भारतीय बाजार में उत्पादों की बिक्री की अनुमति प्रदान की गई। यह निवेदन किया गया है कि अग्रिम लाइसेंसों के तहत दिए गए आयातों को ईओयू द्वारा किए गए आयातों के बराबर नहीं माना जा सकता है। अग्रिम लाइसेंसों पर किए गए आयात इस कारण देश के वाणिज्य में शामिल नहीं किए जा सकते हैं कि पक्षकार पर परिणामी अंतिम उत्पाद का निर्यात करने का दायित्व होता है। यदि ऐसे परिणामी अंतिम उत्पाद में क्रम वृद्धि वाले उत्पादन कार्यकलाप होते हैं तो ऐसी स्थिति में अग्रिम लाइसेंस धारक को स्थानीय बाजार में शुल्क मुक्त आयात के किसी भाग की बिक्री की अनुमति नहीं होती है। किंतु स्थिति ईओयू के मामले में काफी भिन्न होती है जहां नीति में कतिपय परिस्थितियों के तहत डीटीए में बिक्री की अनुमति होती है। ऐसी डीटीए बिक्रियों की अनुमति विदेश व्यापार नीति 2004 तक कम वृद्धि वाले उत्पादन कार्यकलाप की रिपोर्ट देने के बाद नहीं होती थी। घरेलू उद्योग की ऐसी धारणा है कि ईओयू को दी गई ऐसी लोचशीलता (जोकि लाइसेंस धारक को उपलब्ध नहीं होती है) घरेलू उद्योग को हुई निरंतर क्षति का कारण रही।

## छ.2 प्राधिकारी द्वारा जांच

23. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संबंध में दिए गए विभिन्न तर्कों को नोट किया है। प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि चीन जन.गण. के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क लगा हुआ है। चीन जन.गण. के संबंध में अपने अंतिम निर्धारण के संबंध में प्राधिकारी ने इस बात का निर्धारण किया है कि संबद्ध देश से आयात पाटित कीमतों पर हुआ। अतः क्षति तथा कारणात्मक संबंधों के विश्लेषण के प्रयोजनार्थ संबद्ध देश से हुए आयातों को पाटित आयात माना गया है।
24. पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.1 और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II में इन दोनों मुद्दों की उद्देश्यपरक जांच का प्रावधान है, (क) पाटित आयातों की मात्रा तथा समान उत्पादों के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव; और (ख) पाटित आयातों के मात्रा प्रभाव के संबंध में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन उत्पादों का परिणामी प्रभाव। प्राधिकारियों से अपेक्षा है कि वे इस बात की जांच करें कि क्या समग्र रूप में अथवा आयातक देश के उत्पादन अथवा खपत के संबंध में आयातों में काफी वृद्धि हुई है। पाटित आयातों

के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारियों से अपेक्षा है कि वे इस बात की जांच करें कि क्या आयातक देश में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा काफी कीमत कटौती हुई है अथवा यह भी कि क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से काफी सीमा तक कीमतों पर अन्यथा दबाव आया है अथवा कीमत वृद्धि में रुकावट आई है जो अन्यथा एक काफी सीमा तक बढ़ गई होती।

25. क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध माल के पाटित आयातों पर मात्रा एवं कीमत प्रभावों और कीमतों तथा लाभप्रदता पर उसके प्रभाव की जांच की है ताकि क्षति और पाटन तथा क्षति, यदि कोई हो, के बीच कारणात्मक संबंध होने की जांच की जा सके।

(क) मात्रा प्रभाव: पाटित आयातों का मूल्य प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

26. संबद्ध देश से हुए पाटित आयातों की मात्रा के प्रभावों की निम्नानुसार जांच की गई है:-

i) संबद्ध देश की आयात मात्रा और हिस्सा:

विवरण	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)	अप्रैल, 03- सित. 04 (जांच अवधि)
बाजार हिस्सा						
आयात में						
आईबीआईएस के के अनुसार आयात						
चीन	मी. टन	461.54	416.21	469.00	676.144	1014.22
प्रवृत्ति	सूचीकृत	100	90	102	146	146
अन्य देश	मी. टन		13.00	1.00	26.00	39.00
कुल आयात	मी. टन	461.54	429.21	470.00	702.14	1053.22
प्रवृत्ति	सूचीकृत	100	93	102	152	152
आयात में बाजार हिस्सा						

चीन	%	100.00	96.97	99.79	96.30	96.30
अन्य देश	%	0.00	3.03	0.21	3.70	3.70
कुल आयात		100	100	100	100	100

27. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) द्वारा उपलब्ध कराए गए सौदेवार ब्यौरों से इंगित होता है कि मेट्रोनाइडाजोल के आयात विभिन्न सीमाशुल्क टैरिफ शीर्षों के तहत किए गए। डीजीसीआईएंड एस द्वारा बताई गई आयात मात्रा जांच अवधि के दौरान 706.15 मी.टन रही। इंटरनेशनल बिजनेस इन्फारमेशन सर्विसिज (आईबीआईएस) द्वारा उपलब्ध कराए गए आयातों के सौदेवार ब्यौरे यह दर्शाते हैं कि ये आयात डीजीसीआईएंडएस द्वारा बताए गए आयातों की तुलना में अधिक रहे। ऐसा प्रतीत होता है कि विभिन्न सीमाशुल्क शीर्षों के तहत हुए सभी आयात सौदे डीजीसीआईएंडएस द्वारा उपलब्ध आंकड़ों में शामिल नहीं किए गए हैं अतः आईबीआईएस द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों पर विश्लेषण के प्रयोजनार्थ विश्वास किया गया है। आईबीआईएस द्वारा उपलब्ध जानकारी से पता चलता है कि आधार वर्ष से जांच अवधि तक संबद्ध देश से हुए आयातों में 46% की वृद्धि हुई। इसी अवधि के दौरान सभी देशों से हुए कुल आयातों में 52% की वृद्धि हुई। जांच अवधि के दौरान कुल आयातों में संबद्ध देश का हिस्सा 96% रहा जबकि अन्य देशों का हिस्सा लगभग 4% रहा।

28. आधार वर्ष से जांच अवधि तक संबद्ध माल की मांग में 40% की वृद्धि हुई और उत्पादन में 18% की वृद्धि जिससे घरेलू उद्योग की मांग तथा उत्पादन में हुई वृद्धि की तुलना में संबद्ध देश से हुए आयातों में विषम वृद्धि हुई।

ii) मांग, उत्पादन और बाजार हिस्से

क) घरेलू उद्योग का उत्पादन

विवरण	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)	अप्रैल, 03- सित. 04 (जांच अवधि)
क्षमता उपयोग						
क्षमता	मी. टन	864	864	864	952	1428
क्षमता उपयोग	%	88	89	97	94	94
प्रवृत्ति	सूचीकृत	100	102	111	107	107
निर्गत						

उत्पादन	मी.टन	758	772	841	896	1343
प्रवृत्ति	सूचीकृत	100	102	111	118	118

29. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की क्षमता में जांच अवधि के दौरान आधार वर्ष की तुलना में 10% की वृद्धि हुई है। यह भी नोट किया जाता है कि क्षमता में जांच अवधि के अंतिम 6 महीनों में किसी घरेलू उत्पादक द्वारा वृद्धि की गई। उत्पादन में आधार वर्ष की तुलना में वृद्धि का रुख दर्शाया गया है क्योंकि जांच अवधि के दौरान उसमें 18% की वृद्धि हुई। किंतु, उसी अवधि के दौरान मांग में 40% की वृद्धि की तुलना में उत्पादन में केवल 18% की वृद्धि हुई।

**ख) घरेलू उद्योग की बिक्रियां**

विवरण	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)	अप्रैल, 03- सित. 04 (जांच अवधि)
बिक्रियों में वास्तविक एवं संभावित गिरावट						
बिक्रियां - घरेलू	मी.टन	535	647	652	673	1009
आरती ड्रग्स		345	404	466	457	685
यूनिकेम		190	243	185	216	324
प्रवृत्ति	सूचीकृत	100	121	122	126	126
बिक्रियां - निर्यात	मी.टन	92	53	119	68	102
आरती ड्रग्स		52	17	49	21	32
यूनिकेम		40	36	70	47	70
कुल बिक्रियां	मी.टन	627	700	771	741	1111
कैप्टिव खपत	मी.टन	94	115	18	151	227
आरती ड्रग्स		79	94	5	108	163
यूनिकेम		15	21	13	43	64
कैप्टिव सहित बिक्रियां	मी.टन	630	762	669	824	1236
प्रवृत्ति	सूचीकृत	100	121	106	131	131

30. आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि घरेलू बिक्रियों में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 26% की वृद्धि हुई। आधार वर्ष की तुलना में कुल घरेलू बिक्रियों तथा कैप्टिव खपत में भी वृद्धि का रुख दर्शाया गया है क्योंकि जांच अवधि के दौरान इसमें 31% की वृद्धि हुई।

31. जांच अवधि के अंतिम छह महीनों के दौरान एक उत्पादक ने अपनी क्षमता में वृद्धि की थी। उसी उत्पादक की कैप्टिव बिक्रियों में वर्ष 2003-04 की तुलना में अंतिम छह महीनों में 89% की वृद्धि हुई। इसी उत्पादक की घरेलू बिक्रियों में पिछले वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान कोई वृद्धि नहीं दर्शाई गई है बल्कि उसमें 1% की गिरावट आई है जिससे यह इंगित होता है कि अतिरिक्त क्षमता और अतिरिक्त क्षमता से हुए उत्पादन का घरेलू बिक्रियों में प्रयोग नहीं किया गया।
32. निर्यात बिक्रियों में कोई एक समान रुख नहीं दर्शाया गया क्योंकि आधार वर्ष से वर्ष 2001-02 में गिरावट आई और वर्ष 2002-03 में उसमें तीव्र वृद्धि हुई लेकिन जांच अवधि के दौरान उसमें आधार वर्ष की तुलना में 74% की गिरावट आ गई।

ग) मांग और बाजार हिस्सा

विवरण	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)	अप्रैल, 03- सित. 04 (जांच अवधि)
मांग	मी.टन	1091	1191	1139	1526	2289
प्रवृत्ति	सूचीकृत	100	109	104	140	140
याचिकाकर्ता की घरेलू बिक्रियां	मी.टन	535	647	652	673	1009
कैप्टिव खपत	मी.टन	94	115	18	151	227
अन्य उत्पादकों की बिक्रियां	मी.टन					
कुल आयात	मी.टन	462	429	470	702	1053
मांग में बाजार हिस्सा						
चीन	%	42.30	34.93	41.17	44.31	44.31
अन्य देश	%	0.00	1.09	0.09	1.70	1.70
याचिकाकर्ता की घरेलू बिक्रियां	%	49.04	54.32	57.19	44.08	44.08
कैप्टिव सहित	%	57.70	63.98	58.74	53.98	53.98
अन्य उत्पादक	%	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
कुल मांग		100.00	100.00	100.00	100.00	100.00



33. संबद्ध देश की मांग की गणना सभी देशों से हुए सभी आयातों, घरेलू बिक्रियों में वृद्धि तथा कैप्टिव खपत द्वारा की गई है। मांग में वृद्धि में सकारात्मक रुख दर्शाया गया है क्योंकि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान उसमें 40% की वृद्धि हो गई। आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि मांग में घरेलू बिक्रियों के संबंध में घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में वर्ष 2001-02 तथा 2002-03 में वृद्धि हुई थी लेकिन वर्ष 2003-04 और जांच अवधि के दौरान उसमें गिरावट आ गई। जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में आधार वर्ष की तुलना में 90% की गिरावट आ गई। घरेलू बिक्रियों तथा कैप्टिव खपत के संबंध में घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से से पता चलता है कि उसमें वर्ष 2001-02 और वर्ष 2002-03 में वृद्धि हो गई लेकिन वर्ष 2003-04 और जांच अवधि के दौरान उसमें गिरावट आ गई। दूसरी ओर, आधार वर्ष से कुल मांग में संबद्ध देश के हिस्से में वर्ष 2001-02 में गिरावट आ गई लेकिन उसमें वर्ष 2002-03, 2003-04 और जांच अवधि के दौरान उसमें वृद्धि हो गई। जांच अवधि के दौरान मांग में संबद्ध देश के बाजार हिस्से में आधार वर्ष की तुलना में 5% की वृद्धि हो गई।

**(ख) घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव**

34. संबद्ध देश से हुए पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर पड़े प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कम दाम पर बिक्री कीमत, कीमत दबाव तथा कीमत मंदी, यदि कोई है, के संदर्भ में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की भारित औसत उत्पादन लागत, भारित औसत निवल बिक्री वसूली (एनएसआर) और अक्षतिकारी कीमत (घरेलू उद्योग की लागत निर्धारण जानकारी का मानकीकरण किए जाने के बाद परिकलित) की तुलना संबद्ध देश से हुए आयातों की लैंडेड लागत से की गई है।

**कीमत कटौती**

विवरण	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)	अप्रैल, 03- सित. 04 (जांच अवधि)
कीमत कटौती/कीमत दबाव						
लैंडेड मूल्य - चीन	रु./कि. गा.	363.85	347.84	326.06	310.38	310.38
निवल बिक्री	रु./कि. ग्रा.	***	***	***	***	***

वसूली						
उत्पादन लागत	रु./कि.ग्रा.	***	***	***	***	***
कीमत कटौती	रु./कि.ग्रा.	***	***	***	***	***
कीमत कटौती(सीमा)	%	***	***	***	***	***

### कम दाम पर बिक्री कीमत

(मूल्य रु0/कि.ग्रा. में)

कम कीमत पर बिक्री	मेट्रोनिडाजोल
अक्षतिकारी कीमत	***
लैंडेड मूल्य	***
कम कीमत पर बिक्री	***
कम कीमत पर बिक्री(%)	***
कम कीमत पर बिक्री सीमा	27-37

35. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली के निर्धारण में घरेलू उद्योग द्वारा ऑफर की गई छूट, डिस्काउंट तथा कमीशन और केन्द्रीय उत्पाद शुल्क का समायोजन किया गया है।
36. पाटित आयातों के कीमत दबाव संबंधी प्रभावों की जांच भी संबद्ध देश की उत्पादन लागत, निवल बिक्री वसूली और लैंडेड मूल्यों के संदर्भ में की गई है।
37. संबद्ध देशों से हुए आयातों का लैंडेड मूल्य जांच अवधि के दौरान संबद्ध माल के लिए घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली की तुलना में कम रहा। इस प्रकार घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में कटौती आ गई। यह कटौती मार्जिन जांच अवधि के दौरान 20-30% की सीमा में रहा।
38. उत्पादन लागत के रुझान से पता चलता है कि उत्पादन लागत में आधार वर्ष की तुलना में 96% की गिरावट आ गई जबकि बिक्री कीमत में जांच अवधि के दौरान आधार वर्ष की तुलना में 98% की गिरावट रही। चूंकि संबद्ध देश से आयात कई वर्षों से काफी कम कीमतों पर हो रहे थे अतः बिक्री कीमतों में पहले ही मंदी आ गई। किंतु जांच अवधि के दौरान 20-30% की सीमा में इस कटौती से कीमतों

पर और अधिक दबाव आ गया जिससे बिक्री कीमतें जोकि वर्ष 2001-02 से जांच अवधि तक स्थिर रही थी जबकि उत्पादन लागत में वर्ष 2002-03 से जांच अवधि तक वृद्धि हुई ।

39. कम दाम पर बिक्री कीमत क्षति के आकलन का एक महत्वपूर्ण संकेतक होता है। इस प्रकार, प्राधिकारी ने अक्षतिकारी कीमत की गणना की है और उसकी तुलना लैंडेड मूल्य से की है ताकि कम दाम पर बिक्री कीमत का निर्धारण किया जा सके। घरेलू उत्पादक के संबंध में अक्षतिकारी कीमत का मूल्यांकन किया गया है और इसके लिए जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन लागत पर समुचित रूप से विचार किया गया है । इसके अलावा, अकुशलताओं को समाप्त करने के लिए क्षमता उपयोग का मानकीकरण किया गया है । इस विश्लेषण से पता चलता है कि संबद्ध देश के संबद्ध माल का भारित औसत लैंडेड मूल्य जांच अवधि के लिए घरेलू उद्योग के संबंध में निर्धारित अक्षतिकारी कीमत से कम है । कम दाम पर बिक्री मार्जिन जांच अवधि के दौरान 27-37% की सीमा में रहा ।

### छ.3 अन्य क्षति कारकों की जांच

40. घरेलू उद्योग की मात्रा तथा कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव और घरेलू उद्योग की मात्रा, क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्रियों तथा साथ ही पिछले भाग में विभिन्न खंडों के बाजार हिस्सों से मांग पैटर्न, उन अन्य आर्थिक मापकों जिनसे घरेलू उद्योग को क्षति होने का संकेत मिल सकता है, का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है:-

#### i) लाभ एवं नकद प्रवाह पर वास्तविक एवं संभाव्य प्रभाव

#### सूचीकृत आंकड़े

विवरण	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)	अप्रैल, 03- सित. 04 (जांच अवधि)
लाभप्रदता						
उत्पादन लागत भारित	रु./कि. गा.	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीकृत	100	91	91	96	96
बिक्री कीमत	रु./कि. ग्रा.	***	***	***	***	***

भारित						
प्रवृत्ति	सूचीकृत	100	98	98	98	98
लाभ/हानि	रु./कि.ग्रा.	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीकृत	-100	-37	-27	-87	-87
कुल लाभ/हानि-घरेलू	लाख रु.	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीकृत	-100	-45	-33	-109	-109
नकद लाभ	लाख रु.	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीकृत	-100	-28	-19	-106	-106

41. आधार वर्ष से वर्ष 2001-02, 2002-03 तक उत्पादन लागत में आधार वर्ष की तुलना में 91% की गिरावट रही और जांच अवधि के दौरान उसमें वृद्धि हो गई। किंतु, जांच अवधि के दौरान उत्पादन लागत आधार वर्ष के 96% रही। आधार वर्ष से निवल बिक्री वसूली में वर्ष 2001-02, 2002-03 और जांच अवधि के दौरान 98% की गिरावट आ गई। इससे पता चलता है कि वसूली वर्ष 2001-02 तथा 2002-03 में बेहतर रही लेकिन जांच अवधि के दौरान उत्पादन लागत में वृद्धि हो गई लेकिन निवल बिक्री कीमत में उस अनुपात से वृद्धि नहीं हो सकी। प्रति इकाई हानियों में आधार वर्ष से वर्ष 2002-03 तक गिरावट रही लेकिन जांच अवधि के दौरान हानियों में वृद्धि हो गई। इसी प्रकार, नकद हानियों में आधार वर्ष से वर्ष 2002-03 तक सुधार आयात लेकिन जांच अवधि के दौरान यह स्थिति बिगड़ गई।

## ii) रोजगार तथा मजदूरियां

विवरण	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)	अप्रैल, 03- सित. 04 (जांच अवधि)
रोजगार						
कर्मचारी	सं०	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीकृत	100	76	83	92	92
मजदूरियां						
कर्मचारियों को भुगतान की गई मजदूरियां	लाख रु.	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीकृत	100	120	151	151	151
उत्पादन की प्रति	रु०	***	***	***	***	***

इकाई मजदूरियां						
प्रवृत्ति	सूचीकृत	100	118	136	128	128

42. कर्मचारियों की संख्या में आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि तक गिरावट रही जबकि जांच अवधि के दौरान क्षमता में वृद्धि हो गई। इसे उद्योग में प्रगतिशील प्रचलन माना गया।

43. मजदूरियों में आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि तक सतत वृद्धि होती रही। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान इसमें 51% की वृद्धि हो गई। किंतु उत्पादन की प्रति इकाई मजदूरियों में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 28% की वृद्धि हो गई।

### iii) उत्पादकता

विवरण	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)	अप्रैल, 03- सित्त. 04 (जांच अवधि)
उत्पादकता						
कर्मचारी	सं०	***	***	***	***	***
उत्पादन	मी.ट	***	***	***	***	***
प्रति कर्मचारी उत्पादन	मी.ट	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीकृत	100	101	109	120	120

44. कर्मचारियों की संख्या में आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि तक गिरावट रही और प्रति कर्मचारी उत्पादन में जांच अवधि के दौरान काफी वृद्धि हो गई क्योंकि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान इसमें 20% की वृद्धि आ गई।

### iv) माल सूची

विवरण	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)	अप्रैल, 03- सित्त. 04 (जांच अवधि)
उत्पादकता						

औसत मालसूचिया	मी.ट	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीकृत	100	94	103	165	165

45. समग्र दृष्टि से औसत माल सूची में वृद्धि का रुख दर्शाया गया है। आधार वर्ष की तुलना में उसमें जांच अवधि के दौरान 65% की वृद्धि हो गई। किंतु घरेलू बिक्रियों के दिनों की संख्या के बराबर मापी गई औसत माल सूची में गिरावट आई जो आधार वर्ष के 38 दिनों से घटकर यह जांच अवधि में 25 रह गई।

v) लगाई गई पूंजी पर आय और पूंजी लगाने की सामर्थ्य

विवरण	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)	अप्रैल, 03- सित. 04 (जांच अवधि)
निवल नियत संपत्तियां	लाख रु	***	***	***	***	***
लगाई गई पूंजी - एनएफए आधार	लाख रु.	***	***	***	***	***
लगाई गई पूंजी पर आय	%	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीकृत	-100	-16	-1	-146	-146

46. आंकड़ों के मूल्यांकन के आधार पर यह पता चलता है कि एनएफए आधार पर लगाई गई पूंजी पर आय में आधार वर्ष से वर्ष 2002-03 तक सुधार तो हुआ लेकिन जांच अवधि के दौरान यह स्थिति काफी बिगड़ गई।

vi) कीमतों पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाले कारक

47. संबद्ध देश की निर्यात कीमतों के मूल्यांकन से पता चलता है कि उसमें आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि तक गिरावट आती रही। जांच अवधि के दौरान यह आधार वर्ष के 96% रही। सीमाशुल्क में भी आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि तक गिरावट आती रही। वर्ष 2000-01 में यह 25% रही जो जांच अवधि के दौरान घटकर 20% रह गई। इसके परिणामस्वरूप घटी निर्यात कीमत और कम किए गए सीमाशुल्क के संयुक्त प्रभाव के परिणामस्वरूप संबद्ध माल के लैंडेड मूल्य पर

प्रभाव पड़ा। जांच अवधि के दौरान यह आधार वर्ष के 85.30% रही। उत्पादन लागत में वर्ष 2001-02 तथा 2002-03 में गिरावट रही लेकिन जांच अवधि के दौरान इसमें वृद्धि हो गई।

48. चूंकि पाटनरोधी शुल्क लागू रहा अतः संबद्ध माल का आयात पाटनरोधी शुल्क के लागू होने के बाद ही संभव हो सका। भारत की विदेश व्यापार नीति के अनुसार निर्यातोन्मुख यूनिटों/ईपीजेड को इस बात की अनुमति थी कि वे संबद्ध माल का आयात कोई सीमाशुल्क दिए बिना कर सकते हैं। इन यूनिटों द्वारा आयात की अनुमति केवल प्रोसेसिंग तथा निर्यात के प्रयोजन के लिए ही दी जाती थी लेकिन ईओयू यूनिटों को इस बात की भी अनुमति रही कि वे अपने उत्पादन का कुछ भाग घरेलू टैरिफ क्षेत्र (डीटीए) में सामान्य सीमाशुल्क के साथ बेच सकते हैं। इस मामले में ईओयू को मेट्रोनाइडाजोल की अनुमति दी गई और थोड़ी सी प्रोसेसिंग के बाद इस उत्पाद की बिक्री घरेलू टैरिफ क्षेत्र में की जाती रही, वास्तव में पाटनरोधी शुल्क का प्रभाव व्यर्थ रहा, इसलिए मेट्रोनाइडाजोल की कीमत पर संबद्ध देश से हुए आयातों द्वारा प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

#### vii) पाटन की मात्रा

49. संबद्ध देश के मामले में पाटन मार्जिन 68.67% पाया गया है।

#### viii) वृद्धि

50. आंकड़ों के मूल्यांकन से पता चलता है कि संबद्ध माल की मांग, उत्पादन, बिक्रियों तथा उत्पादकता में वृद्धि रही। किंतु, इससे पता चलता है कि उत्पादन लागत, बिक्री कीमत, लाभ तथा लगाई गई पूंजी पर आय में नकारात्मक वृद्धि रही है।

#### छ.4 क्षति मापकों के संबंध में निष्कर्ष

51. घरेलू उद्योग की क्षमता में जांच अवधि के दौरान लगभग 10% की वृद्धि रही क्षमता उपयोग में भी लगभग 7% की वृद्धि हुई। उत्पादन में 18% की वृद्धि हो सकी और घरेलू बिक्रियों में 26% की वृद्धि दर्शाई गई है। किंतु, इसे जांच अवधि में मांग में 40% की वृद्धि की तुलना में देखे जाने की आवश्यकता है। बिक्री वृद्धि

में हालांकि सुधार तो हुआ लेकिन वह मांग में हुई वृद्धि के अनुरूप नहीं रहा । बिक्रियों में वृद्धि की तुलना में उसी अवधि के दौरान मांग में 46% की वृद्धि हुई । मांग में यह वृद्धि 40% की रही लेकिन घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा (घरेलू बिक्रियां तथा कैप्टिव खपत) जो आधार वर्ष में 58% रहा था, जांच अवधि के दौरान घटकर 54% रह गया जबकि संबद्ध देश का बाजार हिस्सा जो आधार वर्ष में 44% रहा था, बढ़कर जांच अवधि में 44% हो गया । निवल बिक्री कीमत से लैंडेड मूल्य का मूल्यांकन करने पर यह स्पष्ट है कि इन आयातों से घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती आती रही है । सुधार होने के बाद लाभप्रदता में जांच अवधि के दौरान स्थिति बिगड़ गई और इसी प्रकार नकद लाभ में भी स्थिति खराब हो गई जिसके परिणामस्वरूप उसी अवधि के दौरान पूंजी निवेश पर आय में भी गिरावट आ गई ।

#### छ.5 अन्य ज्ञात कारक

##### i) अन्य स्रोतों से हुए आयातों की मात्रा तथा कीमतें

52. जांच अवधि के दौरान आयात मुख्य रूप से चीन जन.गण. से हुए जांच अवधि के दौरान कुल 1054 मी.टन आयातों में से 96.30% आयात चीन जन.गण. से हुए हैं। हांगकांग सहित अन्य देशों से हुए 39 मी.टन आयात घरेलू उद्योग को क्षति का संभावित कारण नहीं हो सकता है ।

##### ii) मांग में कमी और/अथवा खपत के पैटर्न में बदलाव

53. संबद्ध माल की कुल मांग में पर्याप्त वृद्धि दर्शाई गई है। इसमें आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 40% की वृद्धि हुई, अतः यह कारक ऐसा कारण नहीं हो सकता है जिसकी वजह से घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो ।

##### iii) विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों की व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां और उनमें प्रतिस्पर्धा

54. संबद्ध माल का मुक्त रूप से आयात किया जा सकता है और घरेलू बाजार में कोई भी व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां नहीं हैं । अतः यह कारक ऐसा कारण नहीं हो सकता है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो ।



## iv) प्रौद्योगिकी विकास और निर्यात निष्पादन

55. किसी भी इच्छुक पक्षकार द्वारा प्रौद्योगिकी अथवा प्रौद्योगिकी से संबंधित ऐसा कोई मुद्दा नहीं उठाया गया जो घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण हो । यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग आधार वर्ष के दौरान कुछ मात्रा का निर्यात कर रहा था लेकिन जांच अवधि के दौरान निर्यातों में आधार वर्ष की तुलना में 74% की गिरावट आ गई । चूंकि ये निर्यात घरेलू बिक्रियों का एक बहुत छोटा सा हिस्सा रहे अतः इस कारक की वजह से घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई ।

## v) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

56. घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार दर्शाया गया है जिसमें आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 20% की वृद्धि हुई है । कर्मचारियों को दी गई मजदूरियों में जांच अवधि के दौरान 51% की वृद्धि हुई है और प्रति यूनिट उत्पादन मजदूरी में भी आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 28% की वृद्धि हुई है ।

## छ.6 कारणात्मक संबंध

57. कारणात्मक संबंध के मुद्दे के बारे में इच्छुक पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों की जांच की गई है । घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति और घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति तथा पाटित आयातों के बीच कारणात्मक संबंध के मुद्दों के बारे में एक विस्तृत जांच की गई । पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II का पैराग्राफ (v) निम्नानुसार उद्धृत है:-

' यह अवश्य ही प्रदर्शित किए जाए कि उपर्युक्त पैराग्राफ (ii) तथा (iv) में निर्धारित पाटन प्रभावों के ज़रिए पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है । पाटित आयातों तथा घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का प्रदर्शन निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष संगत साक्ष्य की जांच के आधार पर होगा ।

निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात की भी जांच करेगा कि क्या किसी ऐसे कारकों जिनमें पाटित आयात शामिल नहीं हों और जो साथ ही घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा रहे हों और इन अन्य कारकों की वजह से क्षति हो रही हो, को पाटित आयातों पर नहीं मढ़ना होगा। इस संबंध में संगत कारकों में अन्य बातों के साथ-साथ शामिल हैं पाटन कीमतों पर नहीं बढ़े हुए आयात की मात्रा तथा कीमतें, मांग में कमी अथवा खपत के पैटर्न में परिवर्तन, व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रवृत्तियाँ तथा विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी में विकास तथा घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन तथा उत्पादकता में विकास।

58. जैसाकि ऊपर चर्चा की गई है घरेलू उद्योग को क्षति इन अन्य ज्ञात कारकों की वजह से नहीं हुई है। हालांकि पाटनरोधी शुल्क लागू रहे लेकिन शुल्क मुक्त योजनाओं के दुरुपयोग के कारण चीन जन.गण. से आयात पाटित कीमतों पर उपलब्ध जारी रहे जिससे घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो गई और उसकी बिक्री घरेलू उद्योग की अक्षतिकारी कीमतों से भी कम कीमत पर हुई जिससे घरेलू उद्योग को अपनी कीमतें कम करने को बाध्य होना पड़ा जिससे वह पाटित आयातों से प्रतिस्पर्धा कर सकता। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को लाभप्रदता, नकद प्रवाह और पूंजी निवेश पर आय में हानि उठानी पड़ी। अतः संबद्ध देश से हुए पाटित आयातों की वजह से घरेलू उद्योग को क्षति हुई।

## ज. पाटन तथा क्षति की पुनरावृत्ति की संभावना

### ज.1 पाटन की पुनरावृत्ति

59. घरेलू उद्योग ने पाटन की पुनरावृत्ति के संबंध में निम्नलिखित निवेदन किए हैं-

#### क) बेसी क्षमता

60. यह निवेदन किया गया है कि चीन जन.गण. के उत्पादकों द्वारा सृजित क्षमताएं उनके स्थानीय बाजार की मांग की तुलना में काफी अधिक है। इसके अलावा, संबद्ध माल के ऐसे अनेक उत्पादक भी हैं जो एक दूसरे से न केवल घरेलू बाजार में बल्कि निर्यात बाजार में भी बहुत ही आक्रामक प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। प्रत्यक्ष रूप से, निर्यात बाजार को देखते हुए काफी भारी क्षमताओं का सृजन किया गया है। इन बाजारों पर कब्जा करने के उद्देश्य से ये उत्पादक पाटित कीमत पर भी उत्पाद बेचने के इच्छुक हैं। इस संबंध में यह जानकारी दी गई है कि चीन की

क्षमता 5000 मी.टन, चीन का उत्पादन 4000 मी.टन, चीन में खपत 1500 मी.टन, चीन से निर्यात 2500 मी.टन और अतिरिक्त अप्रयुक्त क्षमता 1000 मी.टन है। भारतीय मांग 1526 मी.टन की है। यह भी सूचित किया गया है कि अपनी अतिरिक्त क्षमता का उपयोग करके चीन के उत्पादक अपनी हानियों में कमी लाने की स्थिति में होंगे। अतः, चीन के उत्पादक पाटन का सहारा ले रहे हैं।

61. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा किए गए तर्कों की जांच की है और यह पाया गया है कि चीन जन.गण. में मेट्रोनाइडाजोल के संबंध में प्रस्तुत साक्ष्य मौजूद है, किंतु खपत के बारे में कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है। प्रकटन पश्चात निवेदन में यह तर्क दिया गया था कि विदेशी उत्पादक के असहयोग को भारतीय उत्पादकों के साक्ष्य के भार में स्थानांतरित नहीं किया जा सकता है अन्यथा इसका अर्थ यह होगा कि भारतीय उत्पादकों को विदेशी उत्पादकों के असहयोग की एवज में दंडित किया जाएगा। यह भी निवेदन किया गया है कि याचिकाकर्ता को जांच अवधि के दौरान कोई भी साक्ष्य उपलब्ध कराने को नहीं कहा गया। प्राधिकारी की राय है कि पाटनरोधी नियमावली के अनुसार प्राधिकारी को किसी भी इच्छुक पक्षकार द्वारा उपलब्ध कराए गए तथ्य तथा साक्ष्य के आधार पर निर्धारण करना चाहिए। किसी भी साक्ष्य के बिना सामान्य मान्यता को केवल इस कारण स्वीकार नहीं किया जा सकता है कि इसका किसी अन्य इच्छुक पक्षकारों द्वारा विरोध नहीं किया गया है अथवा अन्य इच्छुक पक्षकारों ने सहयोग नहीं किया है। अतः प्राधिकारी ने यह नहीं पाया कि घरेलू उद्योग की अवधारणा के समर्थन में कोई साक्ष्य प्रस्तुत किया गया हो और उसकी यह राय हो कि किसी सामग्री के अभाव में यह निष्कर्ष नहीं दिया जा सकता है कि क्या चीन जन.गण. में कोई अतिरिक्त क्षमता मौजूद है भी।

#### ख) पाटन का जारी रहना

62. यह निवेदन किया गया है कि इस समय आयात अग्रिम लाइसेंस श्रेणी के तहत किए जा रहे हैं। प्रदत्त पाटनरोधी शुल्क वाले आयात की संभावना इस समय शून्य है क्योंकि इसमें शुल्क लगा हुआ है। हालांकि आयातों की लैंडेड कीमत (पाटनरोधी शुल्क बिना) और घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत के बीच अंतर काफी है। यह निवेदन किया गया है कि ऐसी स्थिति में पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने पर माल के पाटन से अग्रिम लाइसेंस श्रेणी के अलावा अन्य माध्यमों से

आयातों में स्थिति गंभीर हो जाएगी । यह भी निवेदन किया गया है कि यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं बनता है कि चीन के निर्यातक तथा उत्पादक शुल्क समाप्त होने पर निरंतर पाटन नहीं करेंगे ।

63. प्राधिकारी ने इस तर्क की जांच की है और पाया कि इन निष्कर्षों के मद्देनजर कि पाटन हो रहा है जैसाकि इन जांच परिणामों के भाग च में पहले ही चर्चा की गई है, पाटन समाप्त होने पर पाटन के जारी रहने की संभावना है ।

#### ग) तीसरे देश से पाटन

64. चीन के उत्पादकों द्वारा मेट्रोनाइडाजोल का निर्यात विश्व के अनेक देशों को किया जा रहा है । उपलब्ध जानकारी से पता चलता है कि चीन के उत्पादक तथा निर्यातक विश्व के अन्य बाजारों में भी मेट्रोनाइडाजोल का पाटन कर रहे हैं । यह उस कीमत से विदित है जिस पर माल का निर्यात अनेक देशों को किया गया है।
65. प्राधिकारी ने इस मुद्दे की जांच की है और उसकी राय है कि ऐसे किसी साक्ष्य के अभाव में कि चीन संबद्ध माल का पाटन अन्य देशों में कर रहा है, अन्य देशों को किए गए निर्यातों की व्याख्या भारत में पाटन की पुनरावृत्ति के रूप में नहीं की जा सकती है ।

#### पाटन की पुनरावृत्ति पर निष्कर्ष

66. प्राधिकारी ने पाया है कि पाटन हुआ है जैसाकि इन जांच परिणामों के भाग च में पहले ही विश्लेषण कर दिया गया है और ऊपर यथाविश्लेषित अन्य कारकों को देखते हुए प्राधिकारी की राय है कि पाटन की पुनरावृत्ति होने की संभावना है ।

#### ज.2 क्षति की पुनरावृत्ति

67. क्षति की पुनरावृत्ति के संबंध में घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित निवेदन किए हैं-

#### क) घरेलू उद्योग की दोषपूर्णता

68. यह निवेदन किया गया है कि यदि मौजूदा शुल्क हटा दिया जाता है तो कीमत कटौती से विचाराधीन उत्पाद के आयातों की कीमत में भारी वृद्धि होगी जिस पर

ये निर्यातक निर्यात कर रहे हैं। इसके अलावा, घरेलू उद्योग का कार्य-निष्पादन विचाराधीन अवधि के दौरान पहले ही प्रतिकूल रहा है क्योंकि निर्यात संवर्धन योजनाओं के दुरुपयोग से बाजार में सीमित आयात मात्रा उपलब्ध रही। यदि ये शुल्क समाप्त हो जाते हैं तो पाटित कीमतों पर होने वाले आयातों पर कोई रोक नहीं होगी। ऐसे संभावना है कि पाटनरोधी उपायों को समाप्त करने के परिणामस्वरूप क्षति और गहन हो जाएगी। यह भी निवेदन किया गया है कि मौजूदा शुल्क समाप्त होने से काफी कीमत कटौती और भारतीय बाजार में कीमतों पर परिणामी दबाव/मंदी हो जाएगी क्योंकि घरेलू उद्योग के पास इसके अलावा और कोई विकल्प नहीं होगा बल्कि सबसे पहले वह अपनी बिक्री कीमतों को कायम रखने की बजाय अपने बाजार हिस्से को कायम रखने का प्रयास करेगा। इसके बदले में घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में और कमी आ जाएगी। उसके बाद घरेलू उद्योग अपनी कीमतों को कम करने को बाध्य हो जाएगा ताकि वह अपनी कीमत बेच सके। यदि घरेलू उद्योग से अपेक्षित उंची कीमतों पर खपत की खरीद जारी नहीं रहती है और यदि आयात कीमतें घरेलू उद्योग की कीमतों से कम नहीं रहती हैं। घरेलू उद्योग द्वारा कीमतों में कुछ भी गिरावट किए जाने का अर्थ घरेलू उद्योग के लाभ में गिरावट करना होगा। घरेलू उद्योग को बाजार से बाहर होने पर भी बाध्य होना पड़ सकता है।

#### ख) मौजूदा उपायों से आयातों द्वारा काफी कीमत कटौती

69. यदि शुल्क समाप्त किया जाता है तो घरेलू उद्योग से होने वाले आयातों से भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो जाएगी। इस बात की काफी बड़ी संभावना है कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों से और अधिक क्षति होगी क्योंकि आयातित उत्पाद और घरेलू उद्योग के उत्पाद के बीच कीमत अंतर बहुत अधिक है जबकि घरेलू उद्योग अलाभकारी कीमत ले रहा है।

#### ग) पाटन मार्जिन का स्तर

70. यह निवेदन किया गया है कि पाटन मार्जिन घरेलू उद्योग द्वारा की गई गणना के अनुसार काफी है।

#### क्षति की पुनरावृत्ति के संबंध में निष्कर्ष

71. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति का साक्ष्य पहले ही पा लिया है और घरेलू उद्योग की दोषपूर्णता के संबंध में घरेलू उद्योग के तर्कों के गुणावगुण,

पर्याप्त कीमत कटौती और पाटन मार्जिन के स्तर के मद्देनजर प्राधिकारी की राय है कि संबद्ध माल के पाटन की वजह से क्षति के जारी रहने की पूरी संभावना है।

72. प्राधिकारी मानता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से भारत में इस उत्पाद के कीमत स्तर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकेगा। किंतु भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में पाटनरोधी उपायों द्वारा कमी नहीं आ सकेगी। इसके विपरीत, पाटनरोधी उपायों के लागू होने से पाटन पद्धतियों द्वारा अर्जित अनुचित लाभ समाप्त हो जाएंगे, घरेलू उद्योग की गिरावट को रोका जा सकेगा और संबद्ध माल के उपभोक्ताओं को व्यापक विकल्प की उपलब्धता को कायम रखने में सहायता मिलेगी। प्राधिकारी नोट करता है कि पाटनरोधी उपायों को लागू करने के परिणामस्वरूप संबद्ध देश से होने वाले आयातों को किसी भी तरह से रोका नहीं जा सकेगा और इसीलिए उपभोक्ताओं के लिए इस उत्पाद की उपलब्धता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा। उत्पादक सप्लाई के दो अथवा और अधिक स्रोतों को अब भी कायम रख सकेंगे।

### झ. अंतिम निष्कर्ष

73. उपर्युक्त जांच के आधार पर प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि:-

- क. संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध माल का भारत को निर्यात उनके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर हुआ है जिससे परिणामस्वरूप पाटन हुआ है;
- ख. घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति हुई है; और
- ग. यदि संबद्ध देश से संबद्ध माल के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाते हैं तो इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति तथा पाटन के जारी रहने अथवा उनकी पुनरावृत्ति होने की संभावना होगी।

### ट. भारतीय उद्योग के हित और अन्य मुद्दे

74. पाटनरोधी शुल्कों का प्रयोजन आमतौर पर, पाटन की अनुचित व्यापार पद्धतियों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना होता है ताकि भारतीय बाजार में एक मुक्त तथा उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनर्स्थापित की जा सके जोकि देश के सामान्य हित में आवश्यक भी है। पाटनरोधी शुल्कों को लागू करने के परिणामस्वरूप संबद्ध देश से होने वाले आयातों को किसी भी तरह से रोका नहीं जा सकेगा और इसीलिए उनसे उपभोक्ताओं को उत्पादों की उपलब्धता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

## ठ. सिफारिशें

75. चीन जन.गण. से हो रहे आयातों के कारण पाटन तथा क्षति की संभावना के सकारात्मक निर्धारण के मद्देनजर प्राधिकारी की राय है कि उक्त देश से होने वाले आयातों पर लागू उपायों को जारी रखे रहने की आवश्यकता है। किंतु, उस देश से हो रहे पाटन के मौजूदा स्तर और घरेलू उद्योग को हो रही क्षति को देखते हुए प्राधिकारी की राय है कि लागू उपायों में संशोधन किए जाने की आवश्यकता है। अतः प्राधिकारी इसे जरूरी समझता है और नीचे वर्णित रूप तथा तरीके में चीन जन.गण. से संबद्ध माल के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करता है।
76. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए अपेक्षतया कम शुल्क वाले नियम को देखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन अथवा क्षति मार्जिन के बराबर राशि के निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करता है जोकि अपेक्षतया कम है ताकि घरेलू उद्योग को हो रही क्षति समाप्त की जा सके। इस बात पर विचार करते हुए कि मूल जांच में लगाया गया शुल्क निर्धारित शुल्क आधार पर रहा था, प्राधिकारी चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध माल के सभी आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क जारी रखने की सिफारिश करता है जो लैंडेड मूल्य और संदर्भ कीमत के बीच के अंतर की राशि के बराबर होगा, जैसाकि नीचे दी गई तालिका के कॉलम 9 में इंगित है, बशर्ते आयात के समय लैंडेड मूल्य कॉलम 9 में इंगित मूल्य से कम हो:-

क्र.स.	उप-शीर्ष	माल का विवरण	विशेष विवरण	उदभव का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	29332920	मेट्रोनिडाजोल		चीन जन.गण.	कोई देश	कोई उत्पाद	कोई निर्यातक	9.94	कि.ग्रा.	अम.डा.

77. इस प्रयोजनार्थ आयातों का लैंडेड मूल्य वह आकलनीय मूल्य होगा जो सीमाशुल्क अधिनियम 1962 के तहत सीमाशुल्क विभाग द्वारा यथानिर्धारित और सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 तथा 9क के तहत लिए गए शुल्कों के अलावा सीमाशुल्क के सभी शुल्कों के बराबर हो।

78. इस आदेश के विरुद्ध कोई भी अपील उक्त अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क, सेवा शुल्क अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जा सकेगी।

क्रिस्टी फेर्नान्डेज, निर्दिष्ट प्राधिकारी

**MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**  
**(Department of Commerce)**

**(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)**  
**NOTIFICATION**

New Delhi, the 5th April, 2006

**FINAL FINDINGS**  
**(Sunset Review)**

**Subject : Anti-Dumping investigations concerning imports of Metronidazole originating in or exported from China PR.**

**No. 15/9/2003-DGAD.**— Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, (hereinafter referred to as Act.) as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as Rules.);

**A. BACKGROUND**

2. WHEREAS, having regard to above Rules the Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) notified final findings vide Notification No.17/1/99-DGAD dated 14th July 2000 recommending imposition of anti-dumping duties on all imports of Metronidazole originating in or exported from China PR. The original investigation in this proceeding was initiated on 29<sup>th</sup> July 1999. The Preliminary findings were issued by the Designated Authority vide Notification No. 17/1/99-DGAD 21<sup>st</sup> February 2000. Final findings of the Authority were issued by the Designated Authority vide Notification No. 17/1/99-DGAD dated 14th July 2000 and the final duty was imposed on the subject goods vide Customs Notification dated 31.8.2000.

3. The Designated Authority, in terms of section 9A (5) of said Act. received a substantiated application from M/s Aarti Drugs Ltd., Mumbai and M/s Unichem Laboratories Ltd., Mumbai requesting for review, enhancement and continuation of the anti-dumping duties levied on the subject goods, for another five years on the grounds that cessation of anti-dumping duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury. The Designated Authority issued a public notice No. 15/9/2003-DGAD dated 8th April 2005, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping (Sunset Review) investigations, to examine whether the expiry of anti dumping duty would lead to continuation or recurrence of dumping or injury

**B. PROCEDURE**

4. In the proceedings the procedure described below has been followed:



- i) After initiation of the review the Authority sent questionnaires, alongwith the initiation notification, to the known exporters/producers in the subject country in accordance with the Rule 6(4), to elicit relevant information.
- ii) Notices were also sent to the domestic industry in India seeking relevant information in accordance with the Rules;
- iii) The Embassy of the subject country in New Delhi was informed about the initiation of the investigation, in accordance with Rule 6(2), with a request to advise the exporters/producers in their country to respond to the questionnaire within the prescribed time.
- iv) Questionnaires were sent to the known importers and consumers of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4),
- v) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years, and the period of investigations. The data provided by the domestic industry sourced from International Business Information Services (IBIS) was verified from IBIS.
- vi) Copies of the initiation notification were also sent to FICCI, CII and ASSOCHAM for wider circulation.
- vii) No exporter/producer and importer responded to the questionnaires.
- viii) M/s. Aarti Drugs Ltd., Mumbai, M/s Unichem Laboratories Ltd., Mumbai and M/s J B Chemicals, Mumbai the domestic producers of the subject goods submitted the information/data;
- ix) The Authority verified the information furnished by the domestic industry to the extent possible on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) to examine the injury suffered, to work out optimum cost of production, cost to make and sell the subject goods in India and so as to ascertain if Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry;
- x) The Authority held a public hearing on 8.3.06 to hear the interested parties orally, which was attended by representatives of the domestic industry. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions of views expressed orally. The written submissions received from interested parties have been considered by Designated Authority in this findings;
- xi) The Authority made available the public file to all interested parties containing non-confidential version of all evidence submitted by various interested parties for inspection, upon request.
- xii) The views expressed by various interested parties in response to the initiation notification and subsequent to the public hearing are discussed in the relevant paragraphs to the extent these are relevant as per rules and have a bearing upon the case. The arguments raised by the interested parties have been examined, considered and, wherever appropriate, dealt in relevant paragraphs.
- xiii) In accordance with Rule 16 supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed on 21.3.2006 to known interested parties and comments received have been duly considered in the findings.
- xiv) Investigations were carried out for the period of investigation (POI) from 1st April 2003 to 30th September 2004 (18 months). However injury analysis have been carried out for the years April 2000 – March 2001, April 2001 – March 2002, April 2002 – March 2003 and the period of investigation.

- xv) \*\*\*\* in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the AD Rules.

### C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

5. The product involved in the original investigation was Metronidazole. This being a Sunset review, therefore, the investigation covers the product covered in the original investigation. Metronidazole is anti-diarrhea and anti-microbial drug. It is used in cases of amoebiasis, trichomonas, to prevent post-operative infection after surgery, giardiasis, acute ulcerative and gingivitis, anaerobic, vaginosis treatment of infection caused by anaerobic micro formation. It is an organic chemical falling under heading No. 29332920 in Chapter 29 of the First Schedule to the said Customs Tariff Act and ITC HS Classification. This classification however, is indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation. The domestic industry also produces Metronidazole having similar characteristics and specifications. No argument has been extended, by any interested party, on the issue of product under consideration or like article and therefore, the Authority holds that the product being manufactured by the domestic industry and the product being manufactured and exported from the subject country is like articles as per AD Rules.

### D. DOMESTIC INDUSTRY

6. In the original investigation the application for anti-dumping investigation was filed by M/s. Aarti Drugs Ltd., Mumbai and M/s Aarey Drugs & Pharmaceuticals, Mumbai on behalf of the domestic industry. In the present sunset review the information/data has been provided by M/s Aarti Drugs Ltd., Mumbai M/s Unichem Laboratories Ltd., Mumbai and M/s J B Chemicals Ltd., Mumbai. The data and information submitted by M/s Aarti Drugs Ltd and M/s Unichem Laboratories Ltd. has been considered for analyzing the injury to the domestic industry. The data provided by M/s J B Chemicals has been disregarded for injury analysis as the domestic sales of this company during POI was only 1 MT whereas rest of the production had been exported.

7. In this case, during POI domestic industry had imported approximately 50% of the total imports of subject goods from China PR in which M/s Aarti Drugs Ltd. account for 40%, M/s Unichem Laboratories Ltd. account 3.07% and M/s J B Chemicals account for 7.15% of total imports. It has been contended that imports were made under Advance Licenses of Duty Exemption Scheme for manufacture of Metronidazole Benzoate for export purpose only and did not enter into commerce of the country, therefore, applicants cannot be excluded from purview of domestic industry.

8. This issue has been examined in terms of Rule 2(b) of Anti Dumping Rules and Article 4.1(i) of the Anti-Dumping Agreement. As per Anti-Dumping Agreement 'when producers are related to exporters or importers or are themselves importers of the allegedly dumped product, the term 'domestic industry' may be interpreted as referring to the rest of producers'. As per Rule 2(b) of the Rules, ' "domestic industry" means the domestic producer as a whole engaged in manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major production of total domestic production of that article except when such producers are related to

exporters or importers of the alleged dumped articles or are themselves importers thereof in which case such producer may be deemed not to form part of domestic industry'.

9. The Authority examined the issue on imports made under Advance Licenses by the applicants. As per Foreign Trade Policy of India, the inputs imported for export production cannot be sold in India. Inputs imported under Advance Licenses after processing/manufacturing necessarily have to be exported. Therefore, the Authority is of the view that inputs imported under Duty Free Advance Licenses when used for export purpose only will not disqualify the producers from domestic industry under Rule 2(b) of AD Rules.

10. The domestic industry has also raised the issue that J B Chemicals should be treated as domestic industry as per definition in Rule 2(b) of AD Rules as Rules refer to producers as a whole engaged in manufacturing of like article. The Authority has examined this issue and is of the view that M/s J B Chemicals is part of domestic industry as per Rule 2(b), however, its data has not been used for injury analysis as injury to the domestic industry is analysed with reference to its sales in the domestic market. In this case M/s J B Chemicals had sold only 1 MT of its production in the domestic market during POI whereas rest of its production had been exported. As sale of 1 MT by M/s J B Chemicals would be insignificant for its impact on the injury to the domestic industry, therefore, the data of this company has been disregarded for the purpose of injury analysis.

## **E. INITIATION OF THE REVIEW AND ARGUMENTS RAISED**

### **E.1 Views of Applicant Domestic Industry**

11. Domestic industry has submitted that despite anti-dumping duty on Metronidazole, dumping continued from the subject country. 'Given the volume of imports and level of prices at which the goods have been exported to India in spite of existence of anti-dumping duty, it is likely that volume of import would further increase in case anti-dumping duties are withdrawn.' Regarding present state of performance, the domestic industry submitted that imposition of anti-dumping duty has helped the domestic industry to maintain and increase their production and utilize capacity at an optimal level and maintain its sales volume. Landing price of imports is significantly below the net sales realization of the domestic industry. Regarding profitability, the industry is facing significant per unit losses over the years. Imports are already undercutting the prices of domestic industry to a significant extent, should the present duty be revoked, the extent of price undercutting would further increase. Further, the performance of domestic industry was already adverse during the period under consideration and it is likely that revocation of anti-dumping measure would result in intensified injury to the domestic industry. It has also been submitted that as per understanding of the domestic industry the production capacity in China for the product under consideration is higher than their domestic demand. Should the current measure be allowed to lapse, there is a threat that significant proportion of the unused production capability would be used to flood the Indian market.

### **E.2 Examination by the Authority**

12. The Authority takes note of arguments raised by the domestic industry regarding continued injury to the domestic industry. These arguments have been taken into account

while analyzing the injury to the domestic industry, threat of recurrence of dumping and injury to the domestic industry.

### **METHODOLOGY FOR CALCULATION OF DUMPING MARGIN**

#### **F. DUMPING DETERMINATION: NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN**

##### **F.1 Examination of Response to Market Economy Treatment Questionnaire by the Authority**

13. The Designated Authority, as per para 8 (2) of the annexure 1 of AD rules for the purpose of assessing the normal value proceeded with the presumption that any country that has been determined to be or has been treated as a non-market economy for the purposes of anti-dumping investigations by the Designated Authority or by the competent authority of any WTO member country during the three years period preceding the investigation is a non-market economy country. In the past three years China PR has been treated as a non-market economy country in the anti-dumping investigations by WTO members such as EU and USA. In the instant case China PR has been proposed to be investigated as a non-market economy country.

14. As per Paragraph 8, Annexure I to the Anti Dumping Rules as amended, the presumption of a non-market economy can be rebutted if the exporter(s) from China provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) in Paragraph 8 and prove the contrary. The cooperating exporters/producers of the subject goods from People's Republic of China are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether:-

- a) the decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;
- b) the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
- c) such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
- d) the exchange rate conversions are carried out at the market rate.

15. The Authority sent copies of the questionnaires to all the known exporters for the purpose of determination of normal value. No exporters/producer responded to the Exporter's and Market Economy Treatment (MET) questionnaire. Hence, the presumption of

non-market economy remain rebutted, therefore, the Authority is proceeding treating exporters/producers in China PR as operating in non-market economy.

16. In view of the above, the Authority is unable to apply the principles set out in paragraph 1 to 6 of Annexure 1 for determination of normal value for the Chinese exporters. Therefore, the normal value in respect of all exporters/producers from China PR is determined as per Rules relating to non-market economy as contained in para 7 of Annexure 1 of AD Rules.

17. As per para 7 of Annexure 1 of AD Rules, the Authority is required to determine normal value on the basis of 'price or constructed value in the market economy third country or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product.' No data or information was made available by the domestic industry about normal value in market economy third country. Exporters/Producers have not responded in this case, therefore, no data is available to the authority in respect of normal value in market economy third country. The prices from third country to India would also be not appropriate to determine as imports from other countries (other than subject country) to India is very small to permit any meaningful conclusion of the normal value. Therefore, the Authority has determined the normal value by resorting to method 'any other reasonable basis'.

## F.2 NORMAL VALUE

18. Under the circumstances, the authority has constructed the normal value by considering the raw material for manufacture of Metronidazole at the international prices, the consumption norms of the domestic industry and reasonable profit. Based on above information available, the normal value has been calculated as Rs.\*\*\* /kg. or USD \*\*\* /kg. by considering the average exchange rate during POI of 1USD=Rs.46.06/-

## F.3 EXPORT PRICE

19. The export price has been determined on the basis of transaction-wise details provided by IBIS. During POI the CIF value of weighted average export price was Rs.\*\*\* /kg (US\$\*\*\* /kg.). After making adjustments on account of inland freight as US\$\*\*\*, ocean freight as \$\*\*\* and marine insurance as \$\*\*\* the ex-factory export price has been calculated as US\$ \*\*\* (1 US\$ = Rs.46.06/- during the POI).

## F.4 DUMPING MARGIN

20. Based on the normal value and export price as determined above, the Authority determined the dumping margin as under:

### Dumping Margin

Exporter/Producer	Normal Value USD/kg.	Export Price USD/kg.	Dumping Margin USD/kg.
All exporters from China PR	***	***	*** (68.67%)

## **METHODOLOGY FOR INJURY DETERMINATION AND EXAMINATION OF CAUSAL LINK**

### **G. INJURY DETERMINATION**

#### **G.1 CONTINUATION OF INJURY**

##### **Views of Domestic industry are summarized below:**

21. Imposition of anti-dumping duty has helped the domestic industry to maintain, and increase its production, sales and utilize capacity at higher levels. The domestic industry would have been able to improve itself further had the dumped import not been available in the market place. Increase in production resulted in increase in productivity. The landed price of imports without anti-dumping duty was significantly below the net realization of the domestic industry. The domestic industry was not able to recover fair price from market even after imposition of duty as dumped imports from China PR was available in market at significantly lower prices because of misuse/abuse of duty exemption scheme. The cash profit of domestic industry have deteriorated significantly during injury period similarly, return on investment shows considerably adverse situation.

22. It has also been contended that imports made by EOU have caused injury to the domestic industry due to permission granted by Govt. of India to EOU to sell product in Indian market. It has been submitted that imports made under Advance Licenses cannot be equated as imports made by EOU. Imports made under Advance Licenses cannot enter the commerce of the Country for the reason that party undertakes an obligation to export the resultant end product. Even if such resultant end product involves insignificant incremental production activity, an Advance License holder is not allowed to sell any part of Duty Free Import in the local market. However, the situation is much different in case of EOU, where the policy permits sales in DTA under certain circumstances. Such DTA sales were permissible after reporting insignificant incremental production activities until Foreign Trade Policy 2004. It is a contention of the domestic industry that such flexibility granted to EOUs (which is not available to License holder) was the cause of continued injury to the domestic industry.

#### **G.2 Examination by the Authority**

23. The Authority has taken note of various arguments raised in regard to injury to the domestic industry. The Authority also notes that anti-dumping duty is in force against China PR. In its final determination in respect of China PR, the Authority had determined that imports from subject country was at dumped prices. Therefore, for the purpose of injury and causal link analysis, the imports from subject country has been treated as dumped imports.

24. Article 3.1 of the ADA and Annexure II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products, with regard to the volume effect of the dumped imports. The authorities are required to examine whether there has

been a significant increase in imports, either in absolute term or relative to production or consumption in the importing member. With regard to the price effect of the dumped imports, the authorities are required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in the importing country, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree, or prevent price increase, which would have otherwise occurred to a significant degree.

25. For the purpose of injury analysis the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports of the subject goods on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal links between the dumping and injury, if any.

**(A) VOLUME EFFECT: Volume effect of dumped imports and impact on domestic industry:**

26. The effects of volume of dumped imports from subject country has been examined as follows:

**i) Import Volume and share of the subject country:**

Particulars	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	POI Annualised	Apr'03-Sep'04 (POI)
<b>Market share</b>						
In Imports						
Imports as per IBIS						
China	MT	461.54	416.21	469.00	676.144	1014.22
Trend	Indexed	100	90	102	146	146
Other Countries	MT		13.00	1.00	26.00	39.00
Total Imports	MT	461.54	429.21	470.00	702.14	1053.22
Trend	Indexed	100	93	102	152	152
<b>Market share in Imports</b>						
China	%	100.00	96.97	99.79	96.30	96.30
Other Countries	%	0.00	3.03	0.21	3.70	3.70
Total Imports		100	100	100	100	100

27. The transaction wise details provided by the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) indicate that imports of Metronidazole had been made under different custom tariff heads. The quantity of imports reported by DGCI&S is 706.15 MT during POI. The transaction-wise details of imports provided by International Business Information Services (IBIS) shows that imports have been higher than what has been reported by the DGCI&S. It appears that all import transactions under different custom heads have not been captured in the data provided by DGCI&S, therefore, the data provided by the IBIS has been relied upon for analysis. Information provided by IBIS shows that imports from the subject country from base year to POI increased by 46%. During the same period, total imports from all countries increased by 52%. Share of the

subject country in total imports during POI was 96%, as compared to the other countries whose share was approximately 4%.

28. From the base year to POI, the demand of the subject goods grew by 40% and production increased by 18% indicating disproportionate growth imports from subject country as compared to growth in demand and production of domestic industry.

ii) Demand, Output and Market shares

a) Production of the Domestic Industry

Particulars	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	POI Annualised	Apr'03- Sep'04 (POI)
<b>Utilization of Capacity</b>						
Capacity	MT	864	864	864	952	1428
Capacity Utilization	%	88	89	97	94	94
Trends	Indexed	100	102	111	107	107
<b>Output</b>						
Production	MT	758	772	841	896	1343
Trend	Indexed	100	102	111	118	118

29. It has been noted that capacity of domestic industry has increased by 10% during POI as compared to the base year. It has also been noted that the capacity was added by one of the domestic producers in the last six months of the POI. The production shows the rising trend, as compared to base year it had increased by 18% during POI. However, as compared to demand which grew by 40% during the same period, the production could only increased by 18%.

b) Sales of Domestic Industry

Particulars	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	POI Annualised	Apr'03- Sep'04 (POI)
<b>Natural and Potential Decline in Sales</b>						
<b>Sales - Domestic</b>	MT	535	647	652	673	1009
Arti Drugs		345	404	466	457	685
Unichem		190	243	185	216	324
Trend	Indexed	100	121	122	126	126
<b>Sales - Exports</b>	MT	92	53	119	68	102
Arti Drugs		52	17	49	21	32
Unichem		40	36	70	47	70
<b>Total Sales</b>	MT	627	700	771	741	1111
<b>Captive Consumption</b>	MT	94	115	18	151	227
Arti Drugs		79	94	5	108	163



Unichem		15	21	13	43	64
<b>Sales including captive</b>	<b>MT</b>	<b>630</b>	<b>762</b>	<b>669</b>	<b>824</b>	<b>1236</b>
Trends	indexed	100	121	106	131	131

30. Analysis of data shows that domestic sales had been rising, as compared to base year it grew by 26% during POI. The total of domestic sales and captive consumption also shows rising trend, as compared to base year it grew by 31% during POI.

31. One of the producer had increased its capacity during last six months of POI. The captive sales of the same producer increased by 89% during last six months as compared to 2003-04. The domestic sales of same producer does not show any growth during POI as compared to previous years rather it declined by 1% indicating that the additional capacity and output from additional capacity had not been used in domestic sales.

32. The exports sales does not show any uniform trend, from base year it declined in 2001-02, risen sharply in 2002-03, however, during POI it declined to 74% of the base year.

**c) Demand and Market Share**

Particulars	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	POI Annualised	Apr'03- Sep'04 (POI)
Demand	MT	1091	1191	1139	1526	2289
Trend	Indexed	100	109	104	140	140
Domestic Sales of petitioner	MT	535	647	652	673	1009
Captive Consumption	MT	94	115	18	151	227
Sales of Other Producers	MT					
Total Imports	MT	462	429	470	702	1053
<b>Market share in Demand</b>						
China	%	42.30	34.93	41.17	44.31	44.31
Other Countries	%	0.00	1.09	0.09	1.70	1.70
Domestic Sales of petitioner	%	49.04	54.32	57.19	44.08	44.08
including Captive	%	57.70	63.98	58.74	53.98	53.98
Other Producers	%	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
Total demand		100.00	100.00	100.00	100.00	100.00

33. The demand of subject goods has been calculated by addition of domestic sales, captive consumption and all imports from all the countries. The growth in demand shows positive trend, it increased by 40% during POI as compared to the base year. The analysis of data shows that market share of domestic industry in respect of domestic sales in demand increased in 2001-02 and 2002-03 but declined in 2003-04 and POI. During POI, the market share of the domestic industry declined to 90% of the base year. The market share of domestic industry in respect of domestic sales and captive consumption shows that it

increased in 2001-02 and 2002-03 but declined in 2003-04 and POI. During POI the market share of domestic industry declined to 94% of the base year. On the other hand the share of subject country in total demand from base year declined in 2001-02, however, it rose in 2002-03, 2003-04 and POI. During POI, the market share of subject country in demand grew by 5% of the base year.

**(B) Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry**

34. The impact on the prices of the domestic industry on account of dumped imports from the subject country has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the weighted average cost of production, weighted average Net Sales Realisation (NSR) and the Non-Injurious Price (NIP) of the domestic industry (worked out after normating the costing information of the domestic industry) have been compared with landed cost of imports from the subject country.

**Price Undercutting**

Particulars	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	POI Annualised	Apr'03-Sep'04 (POI)
Price Undercutting/ Price Suppression						
Landed Value- China	Rs./kg	363.85	347.84	326.06	310.38	310.38
Net Sales Realisation	Rs./kg	***	***	***	***	***
Cost of Production	Rs./kg	***	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs./kg	***	***	***	***	***
Price Undercutting (Range)	%	***	***	***	20-30%	***

**Price Underselling**

(Value in Rs./kg)

Price Underselling	Metronidazole
Non Injurious Price	***
Landed Value	***
Price Underselling	***
Price Underselling (%)	***
Price Underselling range	27-37

35. In determining the net sales realization of the domestic industry, the rebates, discounts and commission offered by the domestic industry and the Central Excise Duty have been adjusted.

36. The price suppression effect of the dumped imports has also been examined with reference to the cost of production, net sales realization and the landed values from the subject country.

37. The landed value of imports from the subject countries was lower than the net sales realization of the domestic industry for the subject goods during the POI thereby, undercutting the selling price of the domestic industry. The undercutting margin was in the range of 20-30% during the POI.

38. The trend of cost of production shows that cost of production declined to 96% of the base year whereas the selling price declined to 98% of the base year during POI. As imports from subject country were coming at significantly low prices since many years, therefore, selling prices were already depressed. However, the undercutting in the range of 20%-30% during POI further suppressed the prices whereby selling prices which remained static from 2001-02 to POI whereas cost of production was rising from 2002-03 to POI.

39. The price underselling is an important indicator of assessment of injury; thus, the Authority has worked out a non injurious price and compared the same with the landed value to arrive at the extent of price underselling. The non-injurious price has been evaluated for the domestic producer by appropriately considering the cost of production for the product under consideration during the POI. Also in order to eliminate inefficiencies, the capacity utilization has been normated. The analysis shows that the weighted average landed value of the subject goods from subject country is less than the non injurious price determined for the domestic industry during the period of investigation. The underselling margin was in the range of 27-37% during the POI.

### G.3 Examination of other Injury Parameters

40. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and major injury indicators like volume, capacity, output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern with market shares of various segments in the earlier section, other economic parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analysed hereunder as follows:

#### i) Profits and Actual and Potential Effects on Cash Flow

Particulars	Unit	Indexed data				
		2000-01	2001-02	2002-03	POI Annualised	Apr'03- Sep'04 (POI)
<b>Profitability</b>						
Cost of Production weighted	Rs./kg	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	91	91	96	96
Selling Price Weighted	Rs./kg	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	98	98	98	98
Profit/Loss	Rs./kg	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-37	-27	-87	-87
Total Profit/Loss - Domestic	Rs. Lacs	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-45	-33	-109	-109
Cash Profit	Rs. Lacs	***	***	***	***	***

Trends	Indexed	-100	-28	-19	-106	-106
--------	---------	------	-----	-----	------	------

41. The cost of production from the base year to 2001-02, 2002-03 declined to 91% of the base year and increased during POI. However, during POI the cost of production was 96% of the base year. Net sales realization from the base year declined to 98% during 2001-02, 2002-03 and POI. It shows that realization was better in 2001-02 and 2002-03, however, during POI cost of production increased but net selling price could not increased proportionately. Per-unit losses were declining from base year to 2002-03, however, during POI losses increased. Similarly, cash losses from base year improved till 2002-03 but during POI it shows deterioration.

**ii) Employment and Wages**

Particulars	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	POI Annualised	Apr'03-Sep'04 (POI)
<b>Employment</b>						
Employee	Nos.	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	76	83	92	92
<b>Wages</b>						
Wages paid to employees	Rs. Lacs	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	120	151	151	151
Wages per unit of production	Rs.	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	118	136	128	128

42. Number of employees declined from base year to POI despite addition of capacity during POI. This was explained as progressive automation in the industry.

43. The wages have been increasing consistently from base year to POI. As compared to base year wages increased by 51% during POI. However, wages per unit of production had increased by 28% during POI as compared to base year.

**iii) Productivity**

Particulars	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	POI Annualised	Apr'03-Sep'04 (POI)
<b>Productivity</b>						
Employees	Nos	***	***	***	***	***
Production	MT	***	***	***	***	***
Productivity per employee	MT	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	101	109	120	120

44. The number of employees declined from base year to POI and the production per employee had increased considerably during POI, it increased by 20% during POI as compared to the base year

## iv) Inventories

Particulars	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	POI Annualised	Apr'03-Sep'04 (POI)
Average inventories	MT	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	94	103	165	165

45. The average inventory in absolute term shows rising trend. As compared to base year it had increased by 65% during POI. However, average inventory measured as equivalent of number of days of domestic sales, it declined from 38 days in base year to 25 days during POI.

## v) Return on Capital Employed and Ability to Raise Capital

Particulars	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	POI Annualised	Apr'03-Sep'04 (POI)
Net Fixed Assets	Rs. Lacs	***	***	***	***	***
Capital Employed-NFA Basis	Rs. Lacs	***	***	***	***	***
Return on Capital Employed	%	***	***	***	***	***
Trends	Indexed	-100	-16	-1	-146	-146

46. On evaluation of data it shows that return on capital employed on NFA basis, it improved from base year to 2002-03 but deteriorated significantly during POI.

## vi) Factor affecting prices

47. Evaluation of export prices from subject country shows that it had been declining from base year to POI. During POI it was 96% of the base year. The customs duty has also been declining from base year to POI. From 25% in 2000-01 it declined to 20% during POI. The combined effect of decreased export price and reduced customs duty consequently impacted the landed value of subject goods. During POI it was 85.30% of the base year. The cost of production declined in 2001-02 and 2002-03, however, it increased during POI.

48. As the anti-dumping duty was in force, the imports of subject goods was possible only after application of anti-dumping duty. As per Foreign Trade Policy of India, export-oriented units/EPZs were permitted to make import the subject goods without payment of any custom duty. The imports by these units were permitted for processing and export purpose only, however, EOU units were also permitted to sell some parts of production in the domestic tariff area (DTA) on application of normal custom duty. In this case, Metronidazole was permitted by EOU and after small processing the product was being sold in domestic tariff area virtually nullifying the effect of anti-dumping duty, therefore, the price of the Metronidazole was being affected by imports from subject country.

**vii) Magnitude of Dumping**

49. The dumping margin for the subject country has been found out to be 68.65%.

**viii) Growth**

50. The evaluation of data shows there was growth in demand, production, sales and productivity of the subject goods. However, it shows negative growth in cost of production, selling price, profit and return on capital employed.

**G.4 Conclusion on Injury Parameters**

51. The capacity of domestic industry had increased during POI by approximately 10%, the capacity utilization also increased by approximately 7%. The production could increase by 18% and the domestic sales also shows improvement by 26%. However, this needs to be seen against growth in demand by 40% during POI. The sales growth though showing improvement was not commensurate with the growth in demand. As compared to growth in sales, the growth in imports during the same period was 46%. The growth in demand was 40%, the market share of domestic industry (domestic sales and captive consumption) decreased from 58% in the base year to 54% during POI as compared to market share of the subject country which increased from 42% in base year to 44% during POI. On evaluation of landed value with net selling price, it is apparent that imports had been undercutting the price of domestic industry. The profitability after improving shows deterioration during POI, likewise cash profit shows deterioration consequently return on investment also deteriorated during the same period.

**G.5 OTHERS KNOWN FACTORS****i) Volume and prices of imports from other sources**

52. During the POI the imports have taken place mainly from China PR. Out of total imports of 1054 MT during POI, 96.30% of imports have taken place from China PR. The imports of 39 MT from other countries including Hong Kong is not possible factor causing injury to the domestic industry.

**ii) Contraction in demand and / or change in pattern of consumption**

53. The total demand of the subject goods shows significant growth. It increased by 40% during POI as compared to the base year, therefore, this factor is not possible reason which could have caused injury to the domestic industry.

**iii) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers**

54. The subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market. Therefore, this factor could not have been reason to cause injury to the domestic industry.

**iv) Development of technology and export performance**

55. Technology or technology related issues have not been raised by any interested party as cause of injury to the domestic industry. It is noted that the domestic industry was exporting some quantity during the base year however, during the POI the exports declined to 74% of the base year. As exports constitute very small portion of the domestic sales, therefore, this factor is not causing injury to the domestic industry.

**v) Productivity of the Domestic Industry**

56. Productivity of the domestic industry has shown improvement. It has improved by 20% during POI as compared to the base year. Wages to the employees have increased by 51% during POI and wages per unit of production also increased by 28% during POI as compared to the base year.

**G.6 CAUSAL LINK**

57. The submissions made by interested parties in respect of the issue of causal link have been examined. A detailed examination was made with regards to the issues pertaining to the material injury to the domestic industry and causal link between the material injury to the domestic industry and dumped imports. Paragraph (v) of Annexure II of the Anti-dumping Rules reads as under:

*"It must be demonstrated that the dumped imports are, through the effects of dumping, as set forth in paragraphs (ii) and (iv) above, causing injury to the domestic industry. The demonstration of a causal relationship between the dumped imports and the injury to the domestic industry shall be based on an examination of relevant evidence before the designated authority. The designated authority shall also examine any known factors other than the dumped imports which at the same time are injuring the domestic industry, and the injury caused by these other factors must not be attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include, inter alia, the volume and prices of imports not sold at dumping prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry."*

58. As discussed above, the injury to the domestic industry is not caused by these other known factors. Though the anti-dumping duty was in force even then because of misuse of duty exemption schemes, the imports from China PR continued to be available to dumped prices which was undercutting prices of domestic industry and was being sold at prices below the non-injurious prices of the domestic industry, forcing the domestic industry to keep their prices low to compete with the dumped imports. Consequently, the domestic industry suffered in profitability, cash profits and return on investment, therefore, the dumped imports from the subject country was causing injury to the domestic industry.

## **H. LIKELIHOOD OF RECURRENCE OF DUMPING AND INJURY**

### **H.1 Recurrence of Dumping**

59. The domestic industry has made following submissions regarding recurrence of dumping:

#### **a) Surplus capacity and export orientation of Chinese producers**

60. It has been submitted that the capacities created by producers in China PR are significantly higher than demand in their local market. Further, there are several producers of the subject goods who are competing very aggressively with each other not only in the domestic market but in export market as well. Evidently huge capacities have been created considering export market. In order to capture these markets, these producers are willing to sell the product even at dumped price. In this regard, it has been informed that the capacity in China is 5000 MT, production in China is 4000 MT, consumption in China is 1500MT, export from China is 2500 MT and excess unutilized capacity is 1000 MT. The Indian demand is 1526 MT. It has also been informed that by utilizing their excess capacity the Chinese producers would be in a position to reduce its losses. Therefore, the Chinese producers are resorting to dumping.

61. The Authority has examined the argument raised by the domestic industry and it has been found that evidence has been submitted about the capacity of Metronidazole in China PR, however, no evidence has been submitted about the consumption. In the post disclosure submission, it had been argued that non-cooperation by foreign producer cannot shift burden of proof on Indian producers, otherwise it would imply that Indian producers would be penalized for non-cooperation of the foreign producers. It has also been submitted that petitioner was not called upon to provide any evidence during the course of investigation. The Authority is of the view that as per AD Rules, the Authority is to make the determination on the basis of facts and evidence made available by any of the interested party. Simple assertions not backed by any evidence cannot be accepted just because it had not been opposed by any other interested parties or the other interested parties have not cooperated. Therefore, the Authority did not find that any evidence has been submitted in support of contention of the domestic industry and takes a view that in absence of the material it cannot be concluded whether any excess capacity exist in China PR.

#### **b) Continuance of Dumping**

62. It has been submitted that imports at present are being made under Advance License category. Anti-dumping duty paid imports are possibly nil at present due to duty itself, even though the difference between landed price of imports (without anti-dumping duty) and selling price of domestic industry is too significant. It has been submitted that in such a situation, on revocation of anti-dumping duty, the dumping of goods would aggravate in the imports other than the advance license category. It has also been submitted that there is no reason to believe that why the exporters and producers from China would not continuously dump on revocation of duty.

63. The Authority has examined that argument and finds that in view of the findings that there exists dumping as already discussed in part F of these Findings, there is a possibility of continuation of dumping on revocation of duty.



### **c) Third Country Dumping**

64. The Metronidazole is being exported by Chinese producers to a number of countries in the world. Information available suggests that producers and exporters from China are dumping Metronidazole in the other world markets also. This is evident from prices at which goods have been exported to a number of countries.

65. The Authority examined the issue and is of the view that in absence of any evidence that the China is dumping the subject goods in other countries, the existence of exports to other countries cannot be interpreted as recurrence of dumping to India

### **Conclusion on Recurrence of Dumping**

66. The Authority has found existence of dumping as already analysed in part F of this findings and in view of the other factors as analysed above, the Authority is of the view that there is a possibility of continuance of dumping.

### **H.2 Recurrence of Injury**

67. Regarding recurrence of injury the domestic industry has made following submissions:

#### **a) Vulnerability of the Domestic Industry**

68. It has been submitted that should the present duty be revoked, the extent of price undercutting would result in quantum jump in imports of product under consideration, given the price at which these exporters are exporting. Further the performance of the domestic industry was already adverse during period under consideration due to limited imports volume available in market through misuse of export promotion schemes. Should the duties be revoked, there would be no restriction on imports at dumped prices. It is likely that revocation of anti-dumping measure would result in intensifying injury. It has also been submitted that revocation of present duty would cause a significant price undercutting and resultant suppression/depression of prices in the Indian market, as the domestic industry would have no option but first to try to maintain its market share rather than maintaining its selling prices. This would in turn further erode the profitability of the domestic industry. The domestic industry would thereafter be forced to reduce its prices in order to sell the product given that no consumption would continue to buy from domestic industry at higher prices should the imports prices be lower than the domestic industry's prices. Any reduction in the prices by the domestic industry would then imply deterioration in profits of the domestic industry. The domestic industry could even be forced out of the market.

#### **b) Significant price undercutting by imports with current measures**

69. Imports from subject country would be undercutting prices of domestic industry in the Indian market in case duty is revoked. There is a great likelihood of further injury to the domestic industry from dumped imports as the level of price difference between imported product and domestic industry's product is too significant even when domestic industry is charging unremunerative prices.

**c) Level of dumping margin**

70. It has been submitted that the dumping margin is significant as per the calculation made by the domestic industry.

**Conclusion on Recurrence of Injury**

71. The Authority has already found the existence of material injury to the domestic industry and in view of the merits in the arguments of the domestic industry about vulnerability of the domestic industry, significant price undercutting and level of dumping margin, the Authority is of the view there is a possibility of continuance of injury because of dumping of the subject goods

72. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the product in India. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from subject country in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply

**I. FINAL FINDINGS**

73. The Authority after considering the foregoing concludes that:

- a. Subject goods originating in or exported from subject country have been exported to India below their normal value, resulting in dumping;
- b. The domestic industry has suffered material injury due to dumped imports;
- c. And discontinuation of anti-dumping duties on the subject goods from subject country may likely to continue or lead to the recurrence of injury to the domestic industry and dumping;

**J. Indian industry's interest & other issues**

74. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

**K. Recommendations**

75. In view of positive determination of likelihood of dumping and injury on account of imports from China PR the Authority is of the opinion that continuation of the measure is

required against imports from that country. However, considering the current level of dumping from that country and injury suffered by the domestic industry, the Authority is of the opinion that the measure in force needs to be revised. Therefore, Authority considers it necessary and recommends anti-dumping duty on imports of subject goods from China PR in the form and manner described hereunder.

76. Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the margin of dumping or margin of injury whichever is lesser, so as to remove the injury to the domestic industry. Considering that the duty in the original investigation was imposed on reference price basis the Authority recommends continuation of definitive antidumping duty, on all imports of subject goods originating in or exported from China PR, as the difference between the landed value and the reference price as indicated in Col 9 of the table below, if the landed value at the time of importation is below the value indicated at Col.9.

S. No	Sub-Heading	Description of Goods	Specification	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount	Unit of Measurement	Currency
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	29332 920	Metronidazole		China PR	Any Country	Any Producer	Any Exporter	9.94	Kg	USD

77. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

78. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

■ CHRISTY FERNANDEZ, Designated Authority